वेदविज्ञान-आलोकः™

(महर्षि ऐतरेय महीदास प्रणीत - ऐतरेय ब्राह्मण की वैज्ञानिक व्याख्या)

Cosmology Plasma Physics Astrophysics String Theory

Vaidic Rashmi Theory

Quantum Field Theory Particle Physics Nuclear Physics

A VAIDIC THEORY OF UNIVERSE

(A Big Challenge to Modern Theoretical Physics)

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

ओ३म्

महर्षि आद्य ब्रह्मा से लेकर..

..दयानन्द पर्यन्त आर्ष परम्परा

।। ओ३म् ।।

भाग – १

(महर्षि ऐतरेय महीदास प्रणीत – ऐतरेय ब्राह्मण की वैज्ञानिक व्याख्या)
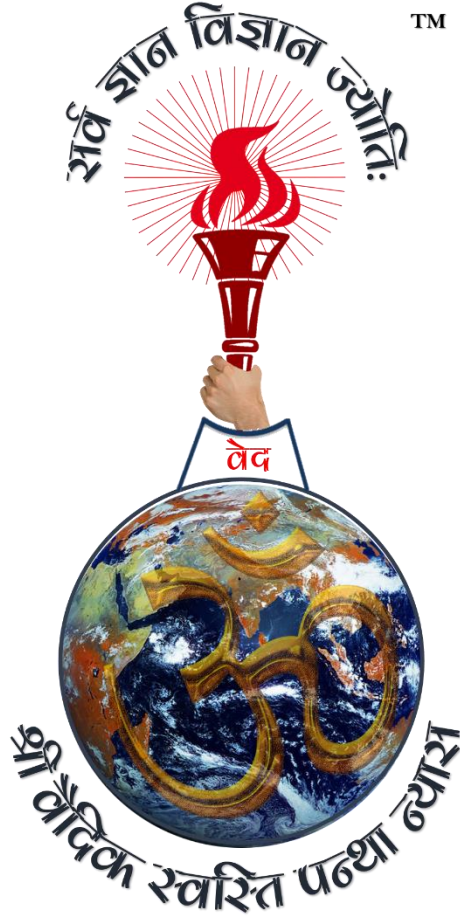
A VAIDIC THEORY OF UNIVERSE

(A Big Challenge to Modern Theoretical Physics)

।। ओ३म् ।।

भाग – १

(महर्षि ऐतरेय महीदास प्रणीत – ऐतरेय ब्राह्मण की वैज्ञानिक व्याख्या)

A VAIDIC THEORY OF UNIVERSE

(A Big Challenge to Modern Theoretical Physics)

व्याख्याता एवं पुरस्कर्त्ता

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

(वैदिक वैज्ञानिक)

संपादक एवं डिज़ाइनर

विशाल आर्य (अग्नियश वेदार्थी)

(M.Sc., Theoretical Physics, University of Delhi)

प्रकाशक

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास

वेदविज्ञान-आलोकः (भाग-१)

First Edition published in Bharat (India) by
Shree Vaidic Swasti Pantha Nyas, 2017, Vikram Samvat 2074

Printed in the territory of Bharat (India)
at LODHA OFFSET LTD.
E-90, Marudhar Industrial Area
Basni 2nd Phase, Jodhpur

ISBN 978-93-5291-333-6

Price: ₹ 5,500/-	Price of 4 Volume ₹ 20,000/-	in Bharat (India)
$ 200.00	$ 700.00	in other countries

Shree Vaidic Swasti Pantha Nyas
Vaidic and Modern Physics Research Centre,
Ved Vigyan Mandir, Bhagal-Bhim, Bhinmal
District: Jalore (Rajasthan), India-343029

Web site: www.vaidicscience.com
E mail: swamiagnivrat@gmail.com, vishalarya66@gmail.com
Phone: 02969-292103, +919414182173, +917424980963, +919829148400

Warning: Don’t try to read this book by translating it into any other language because there are very high chances of misunderstanding.

Note: Whenever it will be necessary to make any changes/corrections in this book, we will notify it on our website **www.vaidicscience.com**, keep visiting mentioned website for more updates.

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

(वैदिक वैज्ञानिक)

प्रमुख, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास

एवं

आचार्य, वैदिक एवं आधुनिक भौतिक शोध संस्थान

समर्पणम्

मैं इस ग्रन्थ को विश्वभर के भौतिक वैज्ञानिकों, वेदानुसन्धानकर्त्ताओं, प्रबुद्ध व विचारशील धर्माचार्यों, मानव-एकता के स्वप्नद्रष्टाओं, सुविचारशील समाजशास्त्रियों, तर्कसम्मत पंथ निरपेक्षता के समर्थकों, वैज्ञानिक बुद्धि के धनी उद्योगपतियों, शिक्षा- शास्त्रियों, भारत के प्रतिभासम्पन्न राष्ट्रवादियों एवं सभी प्रबुद्ध युवा एवं युवतियों की सेवा में भारतवर्ष के प्राचीन वैज्ञानिक गौरव को पुनः प्राप्त कराने एवं सम्पूर्ण विश्व के कल्याण की भावना से सप्रेम समर्पित करता हूं।

सावधानी

मैं इस ग्रन्थ के पाठकों को यह सावधानी वर्तने का भी परामर्श देता हूँ कि इसे किसी अन्य भाषा में अनूदित करके पढ़ने का प्रयास नहीं करें, अन्यथा मेरे भावों को यथार्थरूप में समझे बिना ग्रन्थ का अनुवाद त्रुटिपूर्ण होने की पूर्ण आशंका है।

-लेखक (व्याख्याता एवं पुरस्कर्त्ता)

ओ३म्

प्रकाशकीय वक्तव्य

भारतीय परम्परा वेद को अपौरुषेय (ईश्वरीय) मानती रही है। पाश्चात्य परम्परा भले ही इसे स्वीकार न करे परन्तु ऋग्वेद को संसार का प्राचीनतम ग्रन्थ तो मानती ही है। भारतीय आर्ष परम्परा चारों वेदों की उत्पत्ति मानव-सृष्टि के प्रारम्भ में ही मानती है।

ब्राह्मण ग्रन्थ वेदों को समझने हेतु ऋषियों के समय-२ पर किए प्रवचनों का ही संकलन माने जाते हैं। इनमें से महर्षि ऐतरेय महीदास द्वारा रचित ऐतरेय ब्राह्मण सभी ब्राह्मण ग्रन्थों में सर्वाधिक प्राचीन है। इसे समझे बिना ऋग्वेद को समझना सम्भव नहीं है। इस ग्रन्थ का भाष्य अनेक भारतीय वा विदेशी विद्वानों ने किया है परन्तु सभी भाष्यकारों ने इस ग्रन्थ के वास्तविक स्वरूप को समझा ही नहीं। इन भाष्यकारों में आचार्य सायण सर्वाधिक प्रसिद्ध माने जाते हैं। इनके भाष्य को देखने पर विदित होता है कि इन विद्वानों की दृष्टि में पशुबलि, नरबलि, मांसाहार आदि कर्म वेदविहित है। ब्राह्मण ग्रन्थों का ऐसा अर्थ ग्रहण करने से वेदों की ईश्वरीयता व सर्वविज्ञानमयता पर न केवल गम्भीर प्रश्नचिह्न खड़ा हो जाता है अपितु उनका बड़ा ही बीभत्स रूप संसार के समक्ष प्रस्तुत होता है।

आज भारतीय इतिहास की पुस्तकों में प्रायः ऐसा ही देखने को मिलता है। सौभाग्य से आर्य समाज के एक गम्भीर गवेषक वैदिक वैज्ञानिक माननीय आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक ने अपनी गम्भीर ऊहा, साधना, तप व स्वाध्याय के बल पर इस ग्रन्थ का वैज्ञानिक व्याख्यान करके संसार पर बहुत बड़ा उपकार किया है। मैं आचार्य जी को कई दशकों से जानता हूँ। उनके पुरुषार्थ, तप, साधना, सादगी व ईमानदारी की चर्चा मैं उनके साक्षात्कार से पूर्व से ही सुनता रहा हूँ।

उनके इस ग्रन्थ के अवलोकन से उनकी वैज्ञानिक प्रतिभा का अनुमान प्रतिभाशाली वैज्ञानिक अथवा गम्भीर वेदज्ञ स्वयं ही कर सकते हैं। मैंने उनको आधुनिक भौतिक वैज्ञानिकों के साथ सृष्टि विज्ञान पर चर्चा करते भी स्वयं देखा व सुना है।

इस ग्रन्थ से ब्राह्मण ग्रन्थों के गम्भीर ज्ञान विज्ञान का बोध होकर वेदों की अपौरुषेयता व सर्वज्ञानमयता का प्रत्यक्ष अनुभव होता है। वेद की ऋचाओं को विशेष प्रकार की रश्मियों के रूप में सिद्ध करना तथा उन रश्मियों रूपी कम्पनों से सम्पूर्ण सृष्टि की रचना व संचालन का होना आचार्य जी की अभूतपूर्व व असाधारण खोज है, जो न केवल वेदों के विषय में संसार भर के वेदानुसंधानकर्त्ताओं को नई दिशा देगी अपितु वर्तमान भौतिक विज्ञान के विशेषज्ञों को भी सृष्टि को समझने का एक नया मार्ग सुझाएगी। इससे उन्हें अपने विज्ञान की अनेक कमियों को दूर करने में भी सहयोग मिलेगा।

इसके साथ ही सम्पूर्ण मानव जाति को वेद व ऋषियों की वैदिक संस्कृति के द्वारा एकसूत्र में बांधने में भी यह महान् ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी होगा। मानव समाज में व्याप्त नाना प्रकार के भेदभाव, हिंसा, आतंक, निर्धनता, अशिक्षा, पर्यावरण प्रदूषण, नाना रोगों का होना आदि समस्याएं अज्ञान के द्वारा ही उत्पन्न होती हैं। इस कारण इन सब समस्याओं का समाधान शुद्ध ज्ञान के द्वारा ही स्थायी रूप से हो सकता है।

वर्तमान विज्ञान विशुद्ध ज्ञान प्राप्त करने हेतु प्रयोग, परीक्षण, प्रेक्षण एवं गणितीय व्याख्याओं पर आधारित पद्धति का आश्रय लेता है, उधर ऋषि-मुनि धारणा, ध्यान व समाधि से प्राप्त अन्तःप्रज्ञा के द्वारा ही प्रकृति के अनेक रहस्यों को उद्घाटित कर लिया करते थे। इसी पद्धति के द्वारा उन्होंने नाना प्रकार के गम्भीर विज्ञान को जानकर अपने ग्रन्थों में वर्णित किया। उनके अन्तःप्रज्ञा पर आधारित ग्रन्थों को आज आचार्य जी ने अपनी ऊहा, तर्कशीलता, ध्यान एवं वेदों व आर्ष ग्रन्थों के सुसंगत व्यापक अध्ययन के द्वारा समझा और इस 'वेदविज्ञान-आलोकः' नामक विशाल ग्रन्थ की रचना कर डाली। जो ग्रन्थ पिछले हजारों वर्ष से उच्च कोटि के विद्वानों के लिए भी अज्ञेय अथवा रहस्यमय बना हुआ था, वह आचार्य जी ने कैसे समझा, यह चिन्तनीय है। यह ऋषियों की व्यवस्थित व वैज्ञानिक पद्धति ही है। वर्तमान विज्ञान अनेक संसाधनों के द्वारा जो निष्कर्ष निकलता है, उसमें भी अनेक बार भ्रान्तियां रह जाती हैं, जबकि ऋषियों की अन्तःप्रज्ञा अभी भी उतनी ही प्रामाणिक बनी हुई है। इस पर कभी न कभी संसार के वैज्ञानिकों व दार्शनिकों को विचार करना चाहिए। आज के उच्च कोटि के वैज्ञानिकों व विचारकों को इस ग्रन्थ का गहन अध्ययन करके यह जानने का प्रयास करना चाहिए कि ग्रन्थ के लेखक एवं व्याख्याता ने सृष्टि के गूढ़ रहस्यों को व्यवस्थित ढंग से वर्णित किया है, मानो ये सभी कार्य लेखक के नेत्रों के सम्मुख सम्पन्न हो रहे हों। इस कारण ही मुझे यह ग्रन्थ विशुद्ध ज्ञान का प्रतिपादक प्रतीत होता है।

मुझे आशा है कि यह **''वेदविज्ञान-आलोकः''** नामक ग्रन्थ उस वैदिक शुद्ध ज्ञान का एक महत्वपूर्ण साधन बन कर मानवमात्र के लिए हितकारी होगा और महर्षि दयानन्द सरस्वती की दृष्टि में **'संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है....'**। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु मानवता के प्रति प्रेम करने वाले सभी विवेकी जनों को इस न्यास के सर्वहितकारी वैदिक अनुसंधान कार्य में अपना सर्वात्मना सहयोग करना चाहिए। आशा है पाठक इस ग्रन्थ को पढ़कर मेरे विचारों की सत्यता विदित हो जाएगी।

अन्त मैं एक पूर्व कुलपति होने के नाते भारत के विश्वविद्यालयों के शोध छात्र-छात्राओं को कहना चाहूंगा कि वे भारतीय इतिहास एवं प्राचीन ज्ञान विज्ञान पर उठाए जा रहे प्रश्नों का सशक्त समाधान प्राप्त करने हेतु इस ग्रन्थ का गम्भीरता से अध्ययन करें। इससे उन्हें भारत के प्राचीन व आश्चर्यजनक ज्ञान विज्ञान का परिचय होगा तथा उनमें नये राष्ट्रीय स्वाभिमान का भाव जागेगा। इसके आधार पर वे वर्तमान भौतिकी के क्षेत्र में नये-२ अनुसंधान करने का प्रयास करें। दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र व इतिहास के क्षेत्र में शोध करने वालों को भी इस ग्रन्थ की पूर्वपीठिका से एक नया प्रकाश मिलेगा।

ईश्वर सभी भारतीयों को पुनः जगद्गुरु भारत बनाने की दिशा में पुरुषार्थ करने की प्रेरणा करे, इसी कामना के साथ

डॉ. टी. सी. डामोर
से.नि. कुलपति एवं पुलिस महानिरीक्षक
राष्ट्रपति के विशिष्ट सेवा मेडल से सम्मानित
मंत्री (Secretary), श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास

डॉ. सत्य पाल सिंह
Dr. Satya Pal Singh

मानव संसाधन विकास; और
जल संसाधन, नदी
विकास एवं गंगा सरक्षण राज्य मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF STATE FOR
HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT;
AND WATER RESOURCES,
RIVER DEVELOPMENT AND
GANGA REJUVENATION
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक द्वारा ऋग्वेदीय ब्राह्मण ग्रन्थ **'ऐतरेय ब्राह्मण'** का वैज्ञानिक व्याख्यान **''वेदविज्ञान-आलोकः''** नाम से विशालकाय ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। कुछ दिनों पूर्व आचार्य जी से इस ग्रन्थ की विषयवस्तु पर विस्तार से चर्चा हुई तथा ग्रन्थ का स्वल्प अवलोकन भी किया।

वैदिक वाङ्मय में ब्राह्मण ग्रन्थों का विशिष्ट स्थान है, जो वेद के साथ निकटतम सम्बन्ध रखता है। ब्राह्मण ग्रन्थ वेद को समझने की कुंजी हैं, ऐसा कहा जाए, तो अत्युक्ति नहीं होगी। इनमें भी ऐतरेय ब्राह्मण सर्वाधिक पुरातन व जटिल है। इसमें सोमयाग का वर्णन है, ऐसा वैदिक विद्वानों में सर्वविदित है। इसी आधार पर कर्मकाण्डी विद्वान् नाना श्रौतयाग करते रहे हैं। किन्तु इन श्रौत यागों के पीछे छुपे सृष्टि विद्या के रहस्यों को कोई प्रतिभाशाली विद्वान् ही समझ सकता है। इस ग्रन्थ में वर्णित सोमयाग को आचार्य जी ने सृष्टि में विद्यमान नाना कणों व तरंगों के संयोग-वियोग की प्रक्रिया से सृष्टि उत्पत्ति व संचालन के रूप में व्याख्यात किया है। सृष्टि के मूल उपादान कारण प्रकृति से लेकर विभिन्न रश्मियों, तरंगों व कणों के बनने तथा शनैः-2 तारों के विकसित होने तक सम्पूर्ण विज्ञान इस ग्रन्थ में वर्णित है।

वेद के विषय में आचार्य जी का दृष्टिकोण अति आश्चर्यजनक व महत्वपूर्ण है। इनकी दृष्टि में वेदमंत्र कारण पदार्थ में परमात्मा द्वारा किए गये fluctuation का रूप हैं। इन्हीं से सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माण हुआ है। वाणी के चारों रूपों का वर्णन और उन रूपों से ब्रह्माण्ड का विकसित होना इस ग्रन्थ की महत्वपूर्ण देन है। ग्रन्थ के भाष्य में आचार्य जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट यौगिक पद्धति का ही आश्रय लिया है। इसके सातवें अध्याय के सातवें खण्ड में **'सहस्राश्वीने वा इतः स्वर्गोलोकः'** का यौगिक अर्थ करके सूर्य के केन्द्रीय भाग की त्रिज्या 1 लाख 50 हजार 545 किमी निकालना वैदिक विद्वानों के लिए आश्चर्य का विषय होगा। इसे इस ग्रन्थ में सचित्र समझाया है। वर्तमान वैज्ञानिक इस दूरी के विषय में सुनिश्चतता से क्या कहते हैं, यह तो ज्ञात नहीं परन्तु सटीक दूरी इस ग्रन्थ से निकालना विशेष सुखद है।

इसी प्रकार इस ग्रन्थ के तैतीसवें अध्याय के सभी 6 खण्डों में वर्णित शुनःशेप आख्यान का वैज्ञानिक व्याख्यान करके निर्माणाधीन व निर्मित तारों के केन्द्रीय भाग में नाभिकीय संलयन कैसे प्रारम्भ होता तथा कैसे संचालित होता है, इसका विस्तृत वर्णन किया गया है। उधर इसी आख्यान के आधार पर विद्वानों ने नरबलि, पुरुष विक्रय जैसे बीभत्स कर्मों का विधान किया है।

वर्तमान भौतिकी की दृष्टि से विचार करें तो इस ग्रन्थ में Cosmology, Quantum field theory, Astrophysics, एवं Particle physics आदि का गम्भीर वर्णन है, जो आधुनिक शीर्ष वैज्ञानिकों के लिए भी मार्गदर्शक का कार्य करेगा। मैं भारत व विश्व के वैदिक विद्वानों, वैज्ञानिकों एवं शोध छात्रों को परामर्श देना चाहूंगा कि वे पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर इस ग्रन्थ का गम्भीरता से अध्ययन

करें, तो उन्हें अपने-2 क्षेत्र में अनुसंधान करने के लिए नये-2 बिन्दुओं का ज्ञान होगा तथा विश्व की अनेक समस्याओं को दूर करने में सहयोग मिलेगा।

वस्तुतः वेद सम्पूर्ण सत्यविद्याओं की आदिम स्रोतरूप परमपिता परमात्मा की सनातन वाणी है, यह भारतीय आर्ष मान्यता सदैव से रही है। निःसन्देह इस ग्रन्थ के गम्भीर अध्ययन से यह मान्यता प्रतिपादित होती है।

मैं इस विशालकाय एवं विशिष्ट ग्रन्थ के लेखन के लिए आचार्य जी को धन्यवाद व साधुवाद देता हूँ तथा ईश्वर से उनके दीर्घायुष्य एवं उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ। इसके साथ ही आशा करता हूँ कि इस ग्रन्थ के द्वारा भारत में लुप्त वैदिक विज्ञान का पुनः उदय प्रारम्भ होगा।

सभी शुभकामनाओं सहित

1/12/2017
(डॉ. सत्य पाल सिंह)

दिनांक ०१ दिसम्बर, २०१७

ओ३म्

आशीर्वचन

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

आर्य समाज, सासनी गेट
अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

[पूज्यवर एक क्रान्तिकारी, सत्यनिष्ठ एवं तपस्वी, आर्य संन्यासी हैं। आप भारतीय सेना से सेवानिवृत्त हैं, जिन्होंने अपनी पेंशन भी राष्ट्रहित में सेना को ही सदैव के लिए समर्पित कर दी। स्पष्टवादिता, सदाचार-संयम, निर्भीकता, वेदभक्ति, देशभक्ति एवं ऋषिभक्ति से ओतप्रोत अहर्निश आर्य समाज की सेवा में ९६ वर्ष की आयु में भी युवकों जैसी सक्रियता के साथ संलग्न हैं। -सम्पादक]

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आर्य जगत् के वैदिक वैज्ञानिक आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक द्वारा व्याख्यात **ऐतरेय ब्राह्मण का वैज्ञानिक भाष्य "वेदविज्ञान-आलोक"** नाम से प्रकाशित किया जा रहा है। ऋषियों का युग व्यतीत होने के हजारों वर्ष पश्चात् महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लुप्त वेदविद्या को संसार के समक्ष उद्घाटित किया था। ऋषि के संसार से प्रयाण के पश्चात् वेदविद्या के प्रकाशन का कार्य अधूरा रह गया। स्वामी दयानन्द के अनुयायी आर्यों ने भी उनके कार्य को ठीक-2 नहीं समझा और अनेक आर्य समाजी तो स्वामी दयानन्द जी का नाम मिटाने में लग गये। सब ओर धन, यश व पद के लिए दौड़ मच रही है। ऐसे में प्रिय अग्निव्रत जी ने इस ग्रन्थ को लिखकर केवल आर्य समाज पर ही नहीं अपितु सम्पूर्ण संसार पर भारी उपकार किया है। पद, प्रतिष्ठा व धन की लालसा से दूर रहकर वर्षों तपस्या करके उन्होंने संसार के वैज्ञानिकों के लिए इस लुप्त हुए प्राचीन सनातन वैदिक विज्ञान को न केवल प्रकट किया है अपितु एक प्राचीन वैदिक मार्ग को पुनः प्रशस्त भी किया है।

अग्निव्रत जी का यह महान् ग्रन्थ सम्पूर्ण विश्व में ऋषि दयानन्द, वेद तथा प्राचीन ऋषियों का नाम संसार में रोशन करेगा, ऐसा मैं मानता हूँ।

मैं श्री अग्निव्रत जी को हृदय से बहुत-2 आशीर्वाद देता हूँ कि परमात्मा इन्हें दीर्घायु एवं उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करे, जिससे ये भारतवर्ष का नाम संसार में रोशन कर सकें।

ओ३म्

आशीर्वचन

स्वामी (डॉ) ओम् आनन्द सरस्वती

एम. ए. पीएच.डी, साहित्य वाचस्पति
अधिष्ठाता, पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल,
चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

[पूज्यवर भारतवर्ष के प्रख्यात हिन्दी साहित्यकार तथा ३०-४० वर्ष तक हिन्दी के प्राध्यापक रहे हैं। **सरदार पटेल विश्वविद्यालय में आपके नाम से स्वर्ण पदक तक दिया जाता है।** आप अत्यन्त त्यागी-तपस्वी वेदभक्त, ऋषिभक्त एवं देशभक्त आर्य संन्यासी हैं। आपने सेवानिवृत्ति के पश्चात् मिलने वाली लाखों की विशाल धनराशि तथा पेंशन को भी राष्ट्र हेतु समर्पित कर दिया। आपकी लगभग ९५ वर्ष की अस्वस्थ व वृद्ध आँखों में आज भी भारतमाता, वेदमाता एवं ऋषियों की महान् संस्कृति की वर्तमान दुरवस्था से उत्पन्न पीड़ा को देखा जा सकता है। आप सचमुच महान् त्यागी सच्चे संन्यासी हैं। -सम्पादक]

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता और परमानंद हो रहा है कि मैं अपने जीवन के उत्तरार्ध में ऐसे अद्‌भुत अपूर्व ऋषि कृत्य को संपन्न होते देख रहा हूँ। लगभग १५-२० वर्षों से मैं स्वामी अग्निव्रत जी से परिचित हूँ और आपके सहज, सरल ऋषि तुल्य स्वभाव का मैं कायल रहा हूँ। मेरे भारत राष्ट्र के वैज्ञानिक स्वरूप के पुनः प्रस्तुतीकरण का आपने जो बीड़ा उठाया, वह निश्चित ही युगांतकारी बनकर सामने आया है। आधुनिक युग में आपने जो दुष्कर कार्य अपने हाथ में लिया और उसे पूर्ण कर दिखाया, यह वास्तव में एक अग्निपरीक्षा से किसी भी तरह से कमतर नहीं आंका जा सकता।

सभी ब्राह्मण ग्रंथों में सबसे प्राचीन एवं क्लिष्ट ऐतरेय ब्राह्मण का वैज्ञानिक भाष्य करके जहाँ आपने महर्षि दयानंद सरस्वती का ऋण उतारने का प्रयास किया है, वहीं विश्व को एक महान् वैज्ञानिक शोध प्रदान कर अद्‌भुत उपकार किया है। जिसे कृतज्ञ राष्ट्र हमेशा याद रखे। आपके इस प्रामाणिक अनुसंधान से विश्व के आधुनिक वैज्ञानिक जगत्, आध्यात्मिक जगत् और भौतिक जगत् को निश्चित ही अनंत लाभ होगा। **'वेदविज्ञान-आलोक'** नामक यह शोध ग्रन्थ आने वाले कई महान् शोधों का आधार स्तंभ बनकर भौतिक वैज्ञानिकों का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा।

मेरी भारत सरकार और भारत के माननीय यशस्वी प्रधानमंत्री जी से भी यही प्रार्थना एवं आग्रह है कि इस अद्‌भुत अपूर्व वैदिक विज्ञान के वैज्ञानिक अनुसंधान में अपनी और भारत सरकार की ओर से सभी आधुनिक शोध और अनुसंधान के लिए आधुनिक सुविधाओं हेतु सहायता प्रदान कर राष्ट्र के प्रति अपनी निष्ठा प्रकट करें। भारत राष्ट्र को पुनः विश्वगुरु के पद पर पुनर्स्थापित करने में अपना सहयोग करने की कृपा करें।

मैं अपनी अशेष शुभकामनाएं इसके प्रकाशन और संस्थापन हेतु प्रेषित कर रहा हूँ। साथ ही महान् ऋषिभक्त, वेदभक्त, भारत के रत्न, तपस्वी विद्वान् स्वामी श्री अग्निव्रतजी के स्वास्थ्य और यशस्वी भविष्य की उज्ज्वल कामना करता हूँ। ओम् शम्

आपका शुभचिंतक

ओ३म्

आशीर्वचन
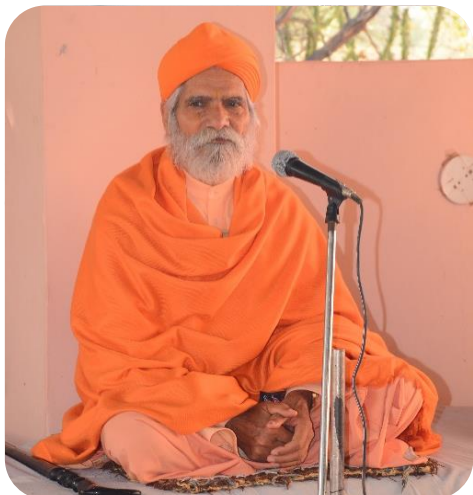
स्वामी वेदानन्द सरस्वती

वेद मन्दिर, कुटेटी, उत्तरकाशी

[पूज्यवर वैदिक साहित्य के विद्वान् होने के साथ-२ भौतिकी, गणित से भी स्नातक हैं। आप आर्य जगत् के लब्धप्रतिष्ठित वैदिक विद्वान् महामहोपाध्याय पूज्य श्रीमान् पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक एवं श्री आचार्य विजयपाल जी विद्यावारिधि के शिष्य रहे हैं। **आप वर्तमान में इस संस्थान के प्रधान संरक्षक भी हैं।** आप मितभाषी, सरल हृदय, उदार एवं योगविद्या के निष्णात वैदिक विद्वान् हैं। -सम्पादक]

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री आचार्य अग्निव्रतजी नैष्ठिक द्वारा ऋग्वेदीय ब्राह्मण **'ऐतरेय ब्राह्मण'** का वैज्ञानिक व्याख्यान **''वेदविज्ञान-आलोकः''** नाम से शीघ्र प्रकाशित किया जा रहा है। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है- **''न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते''** यह बात सर्वविदित है कि गीता कोई स्वतंत्र ग्रन्थ न होकर महाभारत का ही एक अंश है। इस प्रकार गीता का यह वचन भगवान् श्रीकृष्ण का भी है और महर्षि व्यास का भी, ऐसा जानना चाहिए। इधर ज्ञान का मूल स्रोत वेद है, जो साक्षात् परमात्मा का ज्ञान है। वेद को जानने हेतु ब्राह्मण ग्रन्थों को समझना अनिवार्य है। ब्राह्मण ग्रन्थों में ऐतरेय ब्राह्मण सबसे अधिक प्राचीन व जटिल है। यह ग्रन्थ ऋग्वेद को जानने का मूल आधार है।

इस ग्रन्थ की अब तक जो भी व्याख्याएं थीं, वे प्रायः रूढ़ अर्थों को लेकर की गयी हैं, इससे उनमें मांसाहार, पशुबलि, नरबलि आदि अनेकों बीभत्स कर्मों का विधान है। यह भारी दोष ब्राह्मण ग्रन्थों व वेदों पर दीर्घकाल तक चलता रहा। महर्षि दयानन्द की यौगिक शैली के आधार पर इस ग्रन्थ का कोई भाष्य उपलब्ध नहीं था। ऐसे में इस ग्रन्थ पर अनुसंधान करने वाले श्री आचार्य अग्निव्रत जी नैष्ठिक हमारे श्रद्धा और सम्मान के पात्र हैं। इस पवित्र यज्ञ में उनका जीवन समर्पित है। उन्होंने इस ग्रन्थ का न केवल यौगिक शैली से विस्तृत व्याख्यान किया है अपितु उन्होंने इस ग्रन्थ का ऐसा व्याख्यान किया है, जो वर्तमान भौतिक विज्ञान को एक नई दिशा देने में सक्षम है। इसके साथ ही इस भाष्य से वेदानुसंधानकर्त्ताओं को भी वेद व आर्ष ग्रन्थों को समझने के लिए एक वैज्ञानिक शैली का ज्ञान होगा। यह महान् पुण्य का कार्य है। हम सबको दिल खोलकर तन, मन, धन से आचार्य जी की हर सम्भव सहायता करनी चाहिए। मैं परमात्मा से आचार्य जी के दीर्घायुष्य की कामना करता हूँ।

ओ३म्

आशीर्वचन

आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश

महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास,
जोधपुर, राजस्थान

[पूज्यवर वर्तमान आर्य जगत् के शिरोमणि विद्वान् हैं। आप पाणिनीय व्याकरणशास्त्र एवं वेद के तलस्पर्शी विद्वान् हैं। आपका सम्पूर्ण जीवन आर्ष ग्रन्थों के पठन-पाठन में व्यतीत हुआ है। आपने वेद, व्याकरण एवं महाभारत आदि सम्बन्धी लगभग २० महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की है। अनेक ग्रन्थों का सम्पादन भी किया है। आप अभी ८४ वर्ष की आयु में भी सतत अध्ययन, अनुसंधान के साथ अध्यापन कार्य हेतु तत्पर रहते हैं। रागद्वेष से रहित आप सादगी, विनम्रता, पाण्डित्य व सरलता के पुंज हैं। -सम्पादक]

'वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान' वेद विज्ञान मन्दिर, भागलभीम, भीनमाल (जालोर) राजस्थान के संस्थापक, संचालक एवं अध्यक्ष मुनिकल्प आचार्य अग्निव्रत जी नैष्ठिक ने प्राचीन ग्रन्थ **'ऐतरेय ब्राह्मण'** का वैज्ञानिक भाष्य किया है। यह अतिविस्तृत अनुसंधात्मक ग्रन्थ है। यह अनुपम, अद्वितीय और विचारोत्तेजक कृति है। प्राचीन ग्रन्थों के इस प्रकार के वैज्ञानिक व्याख्यानों का यह इदम्प्रथमतया सुप्रयास है।

इसके प्रकाशन से जहाँ वैदिक वाङ्मय की वैज्ञानिकता की पुष्टि होगी, वहीं आधुनिक भौतिक विज्ञान की अपेक्षा वैदिक विज्ञान श्रेष्ठतर है, यह बात विचारशील विद्वानों को ग्राह्य होगी।

हो सकता है, कुछ स्थलों पर पुनर्विचार की अपेक्षा प्रतीत हो, तो भी इससे इस विशिष्ट ग्रन्थ की उपादेयता में कोई न्यूनता नहीं आयेगी।

मनुष्य कितना भी ज्ञानी हो, उसके लेख में स्खलनों की सम्भावना रहती है। पाणिनिमुनि प्रोक्त **'पारस्करप्रभृतिनि च सञ्ज्ञायाम्'** (६.१.१५१) के अन्तर्गत पारस्करप्रभृतिगण में उल्लिखित **'तद्बृहतोः करपत्योश्चोरदेवतयोः सुट् तलोपश्च'** इस गणकार्त्तिक से तस्कर और बृहस्पति शब्दों की साधना स्वरादि की दृष्टि से अग्राह्य है तो भी पाणिनि को महर्षि कहा जाता है। भाषार्थक **सकर्मक घटिँ** (चुरा. २२३) से औणादिक **उ** प्रत्यय से तथा **घण** शब्दे (काश.धा.भ्वा.२०६) से औणादिक तु प्रत्यय करने से सुसाध्य **निघण्टु** पद को निगन्तु का अपभ्रंश (**निगन्तव एव सन्तो निगमान्निघण्टव उच्यन्ते**) मानने वाले और **हस्त** को **हन्** धातु से बनाने वाले (**हस्तो हन्तेः प्राशुर्हनने**) यास्क जी को जब मुनि महर्षि माना जा सकता है, तो इस विशालकाय **ऐतरेय ब्राह्मण के वैज्ञानिक भाष्य** में स्खलनों की सम्भावना मानते हुए भी इस स्वोपज्ञ अतिविशिष्ट ग्रन्थरत्न के प्रणेता आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक को ऋषि पदवी से विभूषित करना चाहिए।

ओ३म्

शुभकामना

आचार्य धर्मबन्धु

प्रणेता, वैदिक मिशन ट्रस्ट
प्रांसला, राजकोट, गुजरात

[मान्यवर इस संस्थान के प्रथम प्रधान संरक्षक रहे हैं। आप भारत के प्रसिद्ध सामाजिक वैदिक प्रवक्ता हैं। आप ओजस्वी वक्ता, प्रखर मेधावी, अद्‌भुत स्मरण शक्ति के धनी एवं बहुआयामी राष्ट्रिय विचारक हैं। देश के प्रत्येक क्षेत्र के प्रख्यात महत्वपूर्ण व्यक्तित्व आपसे निकटता से परिचित एवं प्रभावित हैं। देश की युवा पीढ़ी एवं प्रबुद्ध वर्ग में राष्ट्रिय एवं सामाजिक चेतना जगाना, निर्धनों, असहायों, आपद्‌ग्रस्त प्रजा की सेवा करना, गौरक्षा, संस्कृति एवं शिक्षा के प्रचार प्रसार को आप अपना धर्म मानते हैं। –सम्पादक]

यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि पूज्य आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक जी, जिन्होंने वर्षों की तपस्या के पश्चात् परमात्मा की असीम प्रेरणा से **ऐतरेय ब्राह्मण** का वैज्ञानिक भाष्य **''वेदविज्ञान-आलोकः''** विश्व में प्रथमतया पूर्ण कर लिया है। आपका यह कार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अधूरे स्वप्न को पूरा करने में आधार स्तम्भ का कार्य करेगा तथा संसार के मनुष्यों में फिर से वेदों के प्रति श्रद्धा एवं अनुराग उत्पन्न करेगा।

प्रयोग एवं प्रेक्षण के द्वारा सृष्टि उत्पत्ति के गूढ़ रहस्यों को जानने की सामर्थ्य की एक सीमा होने के कारण, वर्तमान भौतिक विज्ञान वैदिक विज्ञान के द्वारा ही इन रहस्यों को पूर्णता से जान सकता है। इस कार्य से वर्तमान भौतिक विज्ञान को एक नई दिशा मिलने के साथ भौतिकी के शोध छात्रों को अनुसंधान करने में नूतन मार्गदर्शन मिल सकेगा। इस भाष्य से वैदिक वाङ्मय के ऊपर लगे नरबलि, पशुबलि, मांसाहर आदि पापों के आरोपों से मुक्ति मिल सकेगी।

मैं आचार्य जी की वैज्ञानिक प्रतिभा, तर्क व ऊहाशक्ति से निकटता से परिचित हूँ। मैंने आपके अनेक लेखों को पढ़ा है तथा आपको अनेक शीर्ष वैज्ञानिकों के साथ घंटों तक संवाद करते देखा है। मैं आपके व्यक्तिगत जीवन से भी निकटता से परिचित हूँ। आप सरल, निष्कपट, सरल एवं सत्यवक्ता तथा सर्वहित की भावना रखने वाले सादगी प्रिय व्यक्ति हैं। मैं आप में प्राचीन ऋषि-महर्षियों से लेकर महर्षि दयानन्द के प्रति अपार श्रद्धा एवं निष्ठा देखता रहा हूँ। वेदों के दृढ़ अनुयायी एवं वेदार्थ गूढ़ रहस्यों को स्वयं ही समझने की अद्‌भुत क्षमता से सम्पन्न होने के कारण आप वर्तमान में किसी ऋषि-महर्षि से कम नहीं हैं।

मैं इस विशालकाय एवं अद्‌भुत ग्रन्थ के भाष्य के लिए आचार्य जी को सहृदय से शुभकामनाएं देता हूँ तथा ईश्वर से उनके दीर्घायुष्य एवं उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ। इस ग्रन्थ के द्वारा भारत में लुप्त वैदिक विज्ञान का पुनः उदय प्रारम्भ होवें, यही कामना है।

सभी शुभकामनाओं सहित

सम्पादकीय

मेरा जन्म मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) के मेघाखेड़ी गांव में एक आर्य समाजी परिवार में हुआ। मेरे दादा जी चौधरी श्री महाशय इकराम सिंह जी समर्पित आर्य समाजी व मिशनरी भावना वाले प्रचारक थे और मेरी माताजी श्रीमती गीता आर्या एवं पिताजी श्री यशवीर सिंह आर्य भी दृढ़ ऋषि-भक्त हैं। यही मेरे प्रथम गुरु हैं, मैंने इनसे बहुत कुछ सीखा है। बचपन से ही मैं माता-पिता जी के साथ सत्संगों में जाने लगा था। अनेक विद्वानों को सुना, पर किसी भी विद्वान् के उपदेशों में वैदिक विज्ञान के बारे में कभी कुछ नहीं सुना। क्योंकि मैं विज्ञान का छात्र था, इसलिए मेरी इच्छा वैदिक विज्ञान के विषय में सुनने की रहती थी। तब मेरे मन में प्रश्न उठता था कि वेदों में विज्ञान है भी या नहीं? पिताजी से पूछा तो उन्होंने बताया ''वेदों में विज्ञान अवश्य है परन्तु उसे समझना इतना सरल नहीं है। प्रत्येक मंत्र के तीन प्रकार के अर्थ होते हैं- आधिदैविक, आधिभौतिक तथा आध्यात्मिक, तुम्हारे प्रश्न का उत्तर आधिदैविक अर्थ से मिलेगा।'' तब मैंने पूछा कि कौन ऐसा विद्वान् है, जो मुझे आधिदैविक अर्थ बता सकता है? इसका उनके पास कोई जवाब नहीं था। उनकी भी इस विषय में रुचि होने के कारण वे मेरी इस समस्या के बारे में सोचते रहते थे।

जब मैं दिल्ली विश्वविद्यालय से भौतिक विज्ञान या ऐसा कहें कि संसार की आधुनिक विद्याओं में सबसे कठिन माने जाने वाले विषयों Theoretical Physics (String Theory, Astrophysics, Cosmology, Plasma Physics and Quantum Field Theory) में M.Sc. कर रहा था, तब पिता जी ने एक दिन पूज्य **आचार्य अग्निव्रत जी नैष्ठिक** के बारे में बताया, तो मेरा उनसे मिलने का मन हुआ। M.Sc. पूर्ण होने के बाद मैं उनसे मिला, 4 दिनों की चर्चा के पश्चात् मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ। अब मैं अपने प्रश्नों के उत्तर उनसे पा सकता हूँ, यह सब सोच कर मैंने Ph.D. के लिए आवश्यक Entrance Clear करने तथा भारत के कई top research institutes से Interview के लिए Call आने के बाद भी यहाँ रहने का निर्णय माता-पिता जी की सहर्ष अनुमति से लिया।

यहाँ पर रह कर मैंने पूज्य आचार्य जी का जो कार्य देखा, वो अभूतपूर्व लगा। यह कार्य अब तक के भौतिक विज्ञान से बहुत आगे का है साथ ही अत्यंत जटिल व वर्तमान वैज्ञानिकों की सोच से बहुत परे का लगता है, यह बात मैं, जो मैंने अब तक पढ़ा और इंटरनेट के माध्यम से जो विश्व के अनेक वैज्ञानिकों के मुख से सुना, उसके आधार पर कह रहा हूँ। इस कार्य को देख कर हमारे प्राचीन ऋषियों की महान् वैज्ञानिक सोच एवं वेदों की ईश्वरीयता और सर्वविज्ञानमयता का परिचय मिलता है। यह कार्य अध्यात्म व भौतिक विज्ञान का अद्भुत मिश्रण है।

मैं बचपन से ईश्वर द्वारा सृष्टि के रचने, संचालन करने एवं प्रलय करने की बात सुनता रहा हूँ परन्तु कहीं कोई नहीं बताता कि वह ईश्वर ऐसा कैसे करता है? उसका क्रियाविज्ञान क्या है? **गुरुदेव के ऐतरेय ब्राह्मण का वैज्ञानिक भाष्य पढ़ कर मैं परमात्मा के यथार्थ स्वरूप तथा सृष्टि संचालन के क्रिया विज्ञान को गहराई से जान पाया हूँ।**

गुरुदेव को मैंने पिछले लगभग डेढ़ वर्ष से देखा व समझा है, उनके अंदर आर्य समाज, वेद एवं न केवल महर्षि दयानन्द जी अपितु समस्त प्राचीन ऋषि मुनियों, राष्ट्र तथा मानवता के प्रति गहरी आस्था को देखा है। वे अपने शरीर से अधिक समाज, राष्ट्र, वेद, ऋषियों के आदर्श व विश्व मानवता की चिंता करते हैं। यहाँ आने पर मुझे गुरुदेव से बहुत कुछ सीखने को मिला, नियमित, व्यवस्थित

दिनचर्या, ध्यान, योग, प्राणायाम, क्रोध को जीतना आदि। मुझे उनसे विज्ञान के प्रति नई दृष्टि के साथ-२ अत्यधिक स्नेह वात्सल्य प्राप्त हुआ। आपका स्वभाव बहुत ही सरल, सहज एवं ऋषि तुल्य है और जो आपने ऋषि मुनियों के लुप्त वैदिक विज्ञान को यथावत समझकर पूर्नजीवित किया है तथा भौतिकी के कई जटिल concepts को ध्यानावस्था में परमपिता परमात्मा की प्रेरणा से जानकर संसार के सामने उद्घाटित किया है, इस कारण भविष्य में आपको महर्षि अग्निव्रत नाम से जाने जायें, ऐसी मेरी कामना है।

यह ग्रन्थ ऋग्वेद के ब्राह्मण ग्रन्थ ऐतरेय ब्राह्मण का वैज्ञानिक भाष्य है। ऐतरेय ब्राह्मण अब से लगभग ७००० वर्ष पुराना माना जाता है। यह ग्रन्थ महर्षि ऐतरेय महीदास ने लिखा था। इसको पूर्णतः समझे बिना ऋग्वेद को समझना संभव नहीं है। इसमें सम्पूर्ण सृष्टि विज्ञान का संक्षिप्त विवरण है लेकिन कुछ सीमा तक इसे वर्तमान विज्ञान की दृष्टि में अति विस्तृत भी मान सकते हैं। सभी आर्ष ग्रन्थों में इसकी भाषा शैली सबसे क्लिष्ट और रहस्यमय है, इसी कारण हजारों वर्षों से कोई भी विद्वान् इसका यथार्थ विज्ञान समझ नहीं पाया और इसे केवल कर्मकाण्ड का ग्रन्थ मान लिया गया और कर्मकाण्ड भी हिंसा, क्रूरता, पशुबलि आदि पापों से भरा हुआ। ऐसे रहस्यमय ग्रन्थ का वैज्ञानिक भाष्य विश्व में सर्वप्रथम पूज्य गुरुदेव आचार्य अग्निव्रत जी नैष्ठिक ने किया। यह भाष्य करने में गुरुदेव को लगभग साढ़े आठ वर्ष का समय लगा। इस अन्तराल में उन्हें अपने गिरते स्वास्थ्य एवं विरोधियों द्वारा उत्पन्न अनेक बाधाओं से संघर्ष करना पड़ा। कठिन परिश्रम तथा तप करने के पश्चात् इस ग्रन्थ को लिखकर आपने संसार पर एक बहुत बड़ा उपकार किया है, इसके लिए यह संसार आपका ऋणी रहेगा। न्यास की छोटी से लेकर बड़ी सभी व्यवस्थाओं का ध्यान रखते हुए भी बिना किसी सहायता के एकाकी रहकर भाष्य करते रहे। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि ऋषि मुनियों के प्रति श्रद्धा, पूर्व जन्मों के आधार से प्राप्त बुद्धि, ईश्वरीय प्रेरणा, यम-नियमों का कठोर पालन एवं पूर्ण निष्काम भाव से किया गया पुरुषार्थ ही इस महान् सफलता का कारण है।

प्यारे भाइयो! आप जब इस ग्रन्थ पर दृष्टि डालेंगे, तब आपको निश्चित रूप से आभास होगा कि हमारे ऋषि मुनि अदभुत वैज्ञानिक क्षमता से सम्पन्न पुरुष थे। वे भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही क्षेत्रों में विशेषज्ञता को प्राप्त करके सम्पूर्ण विश्व का सर्वांगीण विकास करने में सक्षम थे। इस कारण मेरा आपसे निवेदन है कि आप वर्तमान शिक्षा में उच्च योग्यता प्राप्त करने के साथ-२ इस वैदिक विज्ञान के क्षेत्र में भी पुरुषार्थ करके देखें, तो निश्चित ही जहाँ आपकी प्रतिभा में निखार आयेगा, वहीं आपको आन्तरिक आनन्द की अनुभूति के साथ-२ आपके हृदय में नया राष्ट्रीय स्वाभिमान भी जागेगा।

सौभाग्य से इसके संपादन एवं सम्पूर्ण साज-सज्जा (Design) का दायित्व मुझे सौंपा गया। मुझे यह कार्य करके अत्यधिक प्रसन्नता तथा गर्व का अनुभव हुआ है। मैंने इस ग्रन्थ को एकाग्रतापूर्वक पढ़ा व समझा, जहाँ पर संभव हो सका, सृष्टि प्रक्रिया की कल्पना कर महत्वपूर्ण Diagrams बनाये। **''वेदविज्ञान-आलोक''** (ऐतरेय ब्राह्मण की वैज्ञानिक व्याख्या) केवल सृष्टि उत्पत्ति का ही विज्ञान नहीं बल्कि सृष्टि विज्ञान के विभिन्न पक्षों यथा- Astrophysics, Cosmology, String theory, Particle Physics, Atomic and Nuclear Physics आदि का विवेचक ग्रन्थ है। इसमें एक ऐसे विज्ञान का प्रकाश किया गया है, जिसके विषय में भौतिक वैज्ञानिक अभी सोच भी नहीं पाये हैं और शायद न कभी सोच पायेंगे, क्योंकि इस ग्रन्थ में जिन छन्द-प्राणादि रश्मियों अथवा वेद की ऋचाओं का वर्णन किया गया है, वे आधुनिक विज्ञान की सीमा (Planck Length) से भी बहुत सूक्ष्म हैं। Instruments अथवा Modern technology से शायद ही कभी इतने सूक्ष्म स्तर पर जाकर जाना जा सकेगा। इस ग्रन्थ से आधुनिक विज्ञान को एक नई दिशा मिलने के साथ ही भौतिक विज्ञान की अनेकों अनसुलझी समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

जो महानुभाव ये तर्क देते हैं कि वैदिक विज्ञान केवल theoretical और philosophical ही है, इससे कोई practical और observation नहीं हो सकते। उन्हें मैं कहना चाहूँगा कि यदि आप निष्पक्ष भाव से वर्तमान भौतिकी को देखेंगे, तो आप पाएंगे कि एक सीमा के बाद अधिकांश बातें काल्पनिक, philosophical और कुछ बातें तो नितांत मूर्खतापूर्ण ही प्रतीत होंगी, जिनका कोई समधान किसी के

पास नहीं मिलता, ऐसा मैं अपने अनुभव से कह रहा हूँ। तारों की संरचना, गैलक्सी आदि के विषय में इस ग्रन्थ के आधार पर observations संभव हैं। भविष्य में technology के अपेक्षित विकास होने के पश्चात् वैदिक भौतिकी में भी अनेकों आश्चर्यजनक प्रयोग हो सकते हैं। विज्ञान का प्रारम्भ theory से ही होता है और theory ही किसी भी विज्ञान का मूल है। जितने भी practical हुए हैं, उनके पीछे कोई न कोई theory अवश्य है। Theory के बिना विज्ञान एक कदम आगे नहीं बढ़ सकता। यदि अपूर्ण theory के बल पर विज्ञान और तकनीक ने आगे बढ़ने की कोशिश की, तो इसके परिणाम भयावह होते हैं, ऐसा आप इस समय सम्पूर्ण विश्व में देख रहे हैं। पूर्ण और यथार्थ theory के आधार पर विकसित technology सदैव निरापद एवं सर्वहितकारिणी होती है।

आज संसार में अज्ञानता का घोर अंधकार सा छा रहा है। ईर्ष्या, द्वेष, अंधविश्वास आदि प्रवृत्तियां मनुष्यों में बढ़ती जा रही हैं। संसार विभिन्न सम्प्रदायों में बंट गया है। हर किसी का ईश्वर अलग है और संसार का एक बड़ा वर्ग तो ईश्वर की सत्ता को ही नकारता है, और ऐसे लोगों की संख्या में वृद्धि होती ही जा रही है। वैज्ञानिक तो अधिकांशतः नास्तिक ही हैं। मेरे अनुसार इन सब समस्याओं का कारण परमात्मा एवं वेदों के सही स्वरूप को न जानना ही है। **मैं विश्वास करता हूँ कि इस ग्रन्थ को पढ़ कर हम परमात्मा के वैज्ञानिक स्वरूप को जान सकेंगे। हम जान सकेंगे कि परमात्मा ने कैसे इस सृष्टि की उत्पति की है तथा कैसे इसका संचालन कर रहा है?** इसके अलावा इस ग्रन्थ में हम जानेंगे कि-

1. Force, Time, Mass, Charge, Space, Energy, Gravity, Graviton, Dark Energy, Dark Matter, Mass, Vacuum Energy, Mediator Particles आदि का विस्तृत विज्ञान क्या है? इनका स्वरूप क्या है? यह सर्वप्रथम कैसे बनते है? सृष्टि प्रक्रिया में इनका क्या योगदान है?
2. जिन्हें संसार मूल कण मानता है, उनके मूल कण न होने का कारण तथा इनके निर्माण की प्रक्रिया क्या है?
3. अनादि मूल पदार्थ से सृष्टि कैसे बनी? प्रारम्भ से लेकर तारों तक के बनने की विस्तृत प्रक्रिया क्या है? Big Bang Theory क्यों मिथ्या है? क्यों Universe अनादि नहीं है, जबकि इसका मूल पदार्थ अनादि है?
4. वेद मंत्र इस ब्रह्माण्ड में सर्वत्र व्याप्त विशेष प्रकार की तरंगों (Vibrations) के रूप में ईश्वरीय रचना है। ये कैसे उत्पन्न होते हैं?
5. इस ब्रह्माण्ड में सर्वाधिक गतिशील पदार्थ कौनसा है?
6. गैलेक्सी और तारामंडलों के स्थायित्व का यथार्थ विज्ञान क्या है?
7. वैदिक पंचमहाभूतों का स्वरूप क्या है?
8. संसार में सर्वप्रथम भाषा व ज्ञान की उत्पत्ति कैसे होती है?
9. भौतिक और अध्यात्म विज्ञान, इन दोनों का अनिवार्य सम्बंध क्या व क्यों है?
10. ईश्वर सृष्टि की प्रत्येक क्रिया को कैसे संचालित करता है?
11. ''ओम्'' ईश्वर का मुख्य नाम क्यों है? इसकी ध्वनि इस ब्रह्माण्ड में क्या भूमिका निभाती है?

ऐसे ही अनेकों प्रश्नों के उत्तर आपको इस ग्रन्थ में मिलेंगे। इस ग्रन्थ से-

1. ब्रह्माण्ड के सबसे जटिल विषय Force, Time, Space, Gravity, Graviton, Dark Energy, Dark Matter, Mass, Vacuum Energy, Mediator Particles आदि के विज्ञान को विस्तार से समझा सकेंगे।
2. ब्रह्माण्ड के वास्तविक स्वरूप को समझने के लिए एक नई Theory (Vaidic Rashmi Theory) दे सकेंगे। Vaidic Rashmi Theory में वर्तमान की सभी Theories के गुण तो होंगे परन्तु उनके दोष नहीं होंगे।
3. आज Particle Physics असहाय स्थिति में है। हम वर्तमान सभी Elementary Particles व Photons की संरचना व उत्पत्ति प्रक्रिया को समझा सकेंगे।
4. वैज्ञानिकों के लिए 100-200 वर्षों के लिए अनुसंधान सामग्री दे सकेंगे।

5. इस ग्रन्थ से सुदूर भविष्य में एक अद्‌भुत् भौतिकी का युग प्रारम्भ हो सकेगा, जिसके आधार पर विश्व के बड़े-२ टैक्नोलॉजिस्ट नवीन व सूक्ष्म टैक्नोलॉजी का विकास कर सकेंगे।
6. प्राचीन आर्यावर्त (भारतवर्ष) में देवों, गन्धर्वों आदि के पास जिस टैक्नोलॉजी के बारे में सुना व पढ़ा जाता है, उसकी ओर वैज्ञानिक अग्रसर हो सकेंगे।
7. हम जानते हैं कि विज्ञान की विभिन्न शाखाओं यथा- रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, आयुर्विज्ञान आदि का मूल भौतिक विज्ञान में ही है। इस कारण वैदिक भौतिकी के इस अभ्युदय से विज्ञान की अन्य शाखाओं के क्षेत्र में भी नाना अनुसंधान के क्षेत्रों में क्रान्तिकारी परिवर्तन आ सकेगा।
8. वैदिक ऋचाओं का वैज्ञानिक स्वरूप एवं इससे सृष्टि के उत्पन्न होने की प्रक्रिया ज्ञात हो सकेगी।
9. वेद विज्ञान अनुसंधान की जो परम्परा महाभारत के पश्चात् लुप्त हो गयी थी, वह इस भाष्य से पुनर्जीवित हो सकेगी।
10. संस्कृत भाषा विशेषकर वैदिक संस्कृत को **ब्रह्माण्ड की भाषा** सिद्ध किया जा सकेगा।
11. भारत विश्व को एक सर्वथा नयी परन्तु वस्तुतः पुरातन, अदभुत वैदिक फिजिक्स दे सकेगा, इसके साथ ही वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के पठन-पाठन परम्परा को भी नयी दिशा मिल सकेगी।
12. इससे वेद तथा ऋषियों की विश्व में प्रतिष्ठा होकर भारत वास्तव में जगद्‌गुरु बन सकेगा।
13. हमारा **अपना विज्ञान अपनी भाषा में ही होगा, इससे भारत बौद्धिक दासता से मुक्त होकर नये राष्ट्रीय स्वाभिमान से युक्त हो सकेगा।**
14. इस कारण भारतीयों में यथार्थ देशभक्ति का उदय होकर भारतीय प्रबुद्ध युवाओं में राष्ट्रीय एकता का प्रबल भाव जगेगा।
15. यह सिद्ध हो जाएगा कि **वेद ही परमपिता परमात्मा का दिया ज्ञान है तथा यही समस्त ज्ञान विज्ञान का मूल स्रोत है।**

इस कारण मेरी विश्व के वैज्ञानिकों से विनती है कि वे इस ग्रन्थ को हल्केपन से न लें बल्कि गम्भीरता से पढ़ने का प्रयास करें, तब उन्हें अवश्य ही मेरे कथन की यथार्थता का अनुभव होगा।

इसी आशा के साथ

विशाल आर्य (अग्नियश वेदार्थी), उपाचार्य
(वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान)
वेद विज्ञान मंदिर

भूमिका

वेद की प्रामाणिकता व हमारी दशा

बाल्यकाल से ही मेरी रुचि सत्य के अनुसंधान तथा उस पर आचरण करने की रही है, फिर चाहे वह सत्य धर्म विषयक हो किंवा लौकिक विद्याओं व व्यवहारों से सम्बन्धित हो। आर्यसमाजी परिवार में जन्म लेने के कारण उपदेशकों से यह सुनता था कि वेद परमात्मा की वाणी है, तभी से मन में ये प्रश्न उठते थे कि जब वेद परमात्मा की वाणी है, तब ये वेद आर्य समाजियों के मध्य ही क्यों चर्चा का विषय रहता है? क्यों हिन्दू समाज केवल भागवत पुराण एवं रामचरितमानस तक ही सीमित रह गया है? क्यों इस्लामी, ईसाई आदि अनेकों विचारधाराएं ईश्वर के नाम पर प्रचलित हैं? क्यों साम्यवादी आदि नास्तिक मत संसार में प्रचलित हैं? प्रश्न यह भी था कि **क्या सृष्टि का रचयिता ज्ञान भी दे सकता है? क्या वेद वास्तव में सभी प्रकार के ज्ञान-विज्ञान का मूल है?** क्या महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कह दिया अथवा अन्य ऋषियों ने ऐसा कहा, इसी कारण वेद को ईश्वरीय ज्ञान एवं सम्पूर्ण विद्याओं का मूल मान लें? यह तर्क मुझे कभी स्वीकार्य नहीं रहा। ऐसा करने की प्रवृत्ति तो संसार के सभी सम्प्रदायों की है, तब आर्य समाज को क्या उन्हीं सम्प्रदायों की भीड़ का एक अंग मान लिया जाये? यदि हाँ, तो आर्य समाज अपने सत्य पथ से भ्रष्ट हो जायेगा। मुझे ऋषियों पर पूर्ण विश्वास भी था परन्तु उस विश्वास को मैं सार्वजनिक रूप से सिद्ध करने में विश्वास करता था। इस कारण मुझे सदैव यह चिन्ता रहती थी कि मैं कैसे अपने विश्वास को ऐसे सत्य में परिवर्तित कर सकूँ, जिससे सम्पूर्ण मानव जाति एकमात्र मानवधर्म (वैदिक धर्म) की ओर प्रवृत्त हो सके और सभी प्रकार के मिथ्या मत मतान्तरों के जाल से यह मानव समाज मुक्त हो सके। **मेरी प्रत्येक विषय को पढ़ने की यही प्रवृत्ति रही है कि प्रत्येक सिद्ध तथ्य को भी सिद्ध करके स्वयं देखा जाए।** इसी कारण मैं गणित के सूत्रों को पहले सिद्ध करता तत्पश्चात् ही उनका उपयोग करता। **ऐसी स्थिति में वेद की ईश्वरीयता व सर्वज्ञानमयता की जो घोषणा ऋषियों ने की है, उसे सिद्ध करना भी मेरी दृष्टि में अत्यावश्यक है।** यह खेद का विषय है कि आर्य समाज के प्रारम्भिक काल से ही इस बिन्दु पर कभी ध्यान नहीं दिया गया। शास्त्रार्थ अनेकों हुए परन्तु कोई शास्त्रार्थ इस बात पर नहीं हुआ कि वेद ईश्वरीय क्यों हैं तथा उसमें क्यों सभी विज्ञानों का मूल माना जाए? इस विषय पर शास्त्रार्थ हुए भी, तो शब्द प्रमाणों में ही उलझे रहे, जबकि शब्द प्रमाणों की प्रामाणिकता पर विश्व में संदेह के बादल छाये रहे। ऐसी स्थिति में शब्द प्रमाणों में ही उलझने से क्या अर्थ? यह बात हमारे मूर्धन्य विद्वानों ने कभी नहीं सोची। वे कुरान, बाईबिल एवं भागवत पुराणादि ग्रन्थों की आलोचना करके उन्हें मनुष्यकृत सिद्ध करके ही वेद को ईश्वरीय सिद्ध करने का यत्न करते रहे, यह उनकी भारी भूल थी। **हम दूसरों को अवगुणी वा मूर्ख सिद्ध करके स्वयं गुणवान् तथा ज्ञानी सिद्ध नहीं हो सकते।** हमें तथ्य व तर्कों के आधार पर स्वयं को गुणवान् व ज्ञानी सिद्ध करना होगा, अन्यथा व्यर्थ वितण्डा ही करना माना जाएगा। **मूर्तिपूजा का खण्डन करते-२ हम स्वयं साधना करना भूल गए। अवतारवाद का खण्डन करते-२ महापुरुषों के दिव्य चरित्र का ही तिरस्कार कर बैठे। जन्मना जातिवाद का खण्डन करते-२ वर्णव्यवस्था को भी भूलने की वकालत कुछ कथित प्रबुद्ध आर्यों द्वारा सुनी जाने लगी, तो कहीं आरक्षण के लोभ में फंसते गये। स्त्री शिक्षा व सशक्तिकरण के नाम पर तथा पर्दाप्रथा का विरोध करते करते पाश्चात्य नारी की भाषा, भूषा व उच्छृंखलता में बह गये।** यह सब दर्शाता है कि आर्य समाज के प्रचार में नकारात्मक सोच का प्रभाव अधिक रहा, जबकि ऋषि दयानन्द का यह मत नहीं था। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम दस समुल्लास में मण्डन के पश्चात् ही खण्डन के चार समुल्लास लिखे हैं।

पाश्चात्य का प्रवाह किंवा बौद्धिक दासता

हमारे इस नकारात्मक प्रचार का परिणाम यह हुआ कि पाश्चात्य शिक्षा व सभ्यता, जो सम्पूर्ण विश्व में तेजी से अपना विस्तार कर रही थी, ने न केवल अन्य भारतीयों अपितु आर्य समाजियों की सन्तान को भी अपने प्रवाह में ले लिया। **आज आर्य कहाने वाले परिवारों में अंग्रेजी शिक्षा, खानपान, वेशभूषा व संस्कार पूर्णतः व्याप्त हो गये हैं। मैकाले की शिक्षा नीति के विरुद्ध ओजस्वी वक्तव्य देने**

वाले अपनी संतान को उसी शिक्षा प्रणाली में धकेलने को विवश हैं। आज उसी पद्धति के न केवल D.A.V. कॉलेज व स्कूल हैं, अपितु गुरुकुलों का भी उसी पद्धति की ओर आकर्षण बढ़ रहा है। आज यह विचार प्रकट किया जा रहा है कि अंग्रेजी प्रणाली से शिक्षा दिलाते हुए विद्यालय में संध्या-यज्ञ सिखाकर कभी-२ कुछ उत्सव आयोजित करके ही ऋषि दयानन्द का स्वप्न साकार हो जायेगा। ऐसे मिथ्या विचारों को मूर्तरूप देने में आर्य समाज की जन व धन की शक्ति व्यर्थ नष्ट हो रही है।

जहाँ तक मैं समझता हूँ, इस सबका मूल कारण यही है कि हमने मूल में भारी भूल की है। वेदरूपी मूल को सर्वथा भुला दिया। इसका भी कारण यह रहा कि महर्षि दयानन्द के वेद भाष्य मात्र संकेत रूप थे, उन्हें समय नहीं मिला। उनके संकेतों को प्रथम पीढ़ी के विद्वान् भी पूर्णतः समझ नहीं पाए और वहीं से नकारात्मक प्रचार का प्रचलन प्रारम्भ हुआ। **जितना परिश्रम कुरान, पुराण व बाईबिल के अध्ययन व उनके खण्डन पर किया गया, उतना वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, मनुस्मृति, दर्शन, उपनिषद, रामायण व महाभारत आदि के अध्ययन व अनुसंधान पर नहीं हुआ। व्याकरण पर परिश्रम हुआ परन्तु निरुक्त, छन्द, ज्योतिष, कल्प पर विशेष परिश्रम नहीं हुआ। इस कारण हम ऐसी शिक्षा पद्धति के पाठ्यक्रम का निर्माण नहीं कर सके, जिसे पाश्चात्य शिक्षा के समक्ष खड़ा किया जा सके।** उधर अंग्रेजों ने भारतीयों को भोग विलास की ओर प्रवृत्त कर ही दिया था। राजा महाराजा भी भोगविलास में डूबकर दुर्बल व प्रमादी हो गये थे। उधर भारतीय युवा तेजी से अंग्रेजों को आदर्श मानने की दिशा में अग्रसर हुआ। इधर **जब आर्य समाज ही उस वेग को रोकने में समर्थ नहीं हुआ, तब दूसरा कौन संगठन इसमें समर्थ हो सकता था? सभी ने सगर्व पाश्चात्य शिक्षा पद्धति को अपनाकर बौद्धिक पराधीनता गले लगा ली।** भले ही आर्य समाज के अग्रणी योगदान से देश ने राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त कर ली परन्तु बौद्धिक स्वतंत्रता की बात किसी ने सोची भी नहीं। इस दिशा में आर्य नेता स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, स्वामी दर्शनानन्द ने गुरुकुल का शुभारम्भ किया परन्तु वेद व आर्ष ग्रन्थों के यथार्थ ज्ञान के अभाव में गुरुकुल धीरे-२ खण्डहर होते गये किंवा मात्र कर्मकाण्डी किंवा धर्मोपदेशक पण्डित बनाने के केन्द्र बन कर रह गये, जो स्वयं आर्य समाजी नेता वा विद्वानों के बच्चों को भी अपनी ओर आकृष्ट न कर सके ओर न कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में भारत की दिशा व दशा दोनों ही विनाश के पथ पर अग्रसर हैं। **आज भारत की प्रत्येक समस्या का मूल कारण बौद्धिक दासता ही है। बौद्धिक दासता, मानसिक व आत्मिक दासता लाती है और इसके परिणामस्वरूप राष्ट्रिय एकता, अखण्डता व स्वतंत्रता भी अधिक दिन नहीं रह सकती।** आज आधुनिकता एवं विकास के नाम पर बौद्धिक दासता को प्रसन्नतापूर्वक गले लगाया जा रहा है और बड़े राष्ट्रवादी कहाने वाले इसी मृगमरीचिका में भ्रमित हो रहे हैं और देश को भी भ्रमित कर रहे हैं। मैं समझता हूँ कि वर्तमान परिस्थिति में उनके पास इसका कोई विकल्प भी नहीं है।

साम्प्रदायिक मतभेद

उधर वर्तमान विश्व के परिदृश्य पर दृष्टि डालें, तो जहाँ एक ओर साम्प्रदायिक कट्टरता एवं तज्जन्य भेदभाव, हिंसा व आतंकवाद का ताण्डव दिखाई देता है, वहीं शिक्षा के बढ़ते हुए भी नाना अंधविश्वासों का भी साम्राज्य दिखाई देता है। इतना होने के साथ-२ पाश्चात्य जीवन शैली, संस्कार व शिक्षा सभी सम्प्रदायों को अपने प्रवाह में बहाने लगी है। जिस ईसाई मतावलम्बी देश ने इस भोगवादी सभ्यता को जन्म दिया व प्रचारित किया, उस सभ्यता ने स्वयं ईसाई मान्यताओं की भी जड़ें हिला दी हैं पुनरपि वे देश न केवल स्वयं बाईबिल को गले लगाने को विवश हैं, अपितु संसार भर में ईसाई मत के प्रचार का भारी पुरुषार्थ कर रहे हैं। संसार के मुस्लिम कुरान से बंधे हैं। वस्तुतः इनमें से कुछ कट्टरवादी हैं, तो अन्य यह विचारते हैं कि धर्म विषय मौलवियों व पादरियों वा धर्म ग्रन्थ माने जाने वाले ग्रन्थों का विषय है, अन्य विज्ञानादि शिक्षा वैज्ञानिकों वा अन्य प्रबुद्धों का विषय है। इस मिथ्या विचार से ग्रस्त अनेक वैज्ञानिक उच्च कोटि की प्रतिभा के धनी होते हुए भी अपने-२ सम्प्रदायों की मिथ्या मान्यताओं से हटने का विचार भी नहीं करते। उस समय उनकी वैज्ञानिक सोच शून्य हो जाती है। यही कारण है कि विद्या-विज्ञान का विस्तार होते हुए भी संसार नाना मत-मतान्तरों में बंटा पारस्परिक वैर, विरोध, घृणा, हिंसा से त्रस्त है। **भौतिक विद्याओं में एक होते हुए भी उनका मिथ्या अध्यात्म परस्पर एक नहीं होने देता।** इस सत्य पर कोई भी विचारने का प्रयास नहीं करता कि मानव एकता का एकमात्र आधार सत्य ही है। जैसा कि **महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश** की भूमिका में लिखते हैं-

"सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।"

जहाँ सभी मत स्वयं को ही सत्य मानते हों तथा सभी मतों में बुद्धि, विवेक व विज्ञान का कोई हस्तक्षेप वा उपयोग न हो, तब इन मतों की प्रामाणिकता को कौन सिद्ध करेगा? **आस्थाओं व विश्वासों के नाम पर चल रहे मत ही इस संसार में मानव जाति के विभाजन व विनाश का कारण हैं। इस पर आस्था व विश्वासों की स्वतंत्रता मानव एकता के स्थान पर नवीन-२ मत चलाकर मानव जाति को खण्ड-२ कर रही है।** इस सबका कारण भी यही है कि विभिन्न मत मतान्तरों को कोई ऐसा मत दिखाई नहीं देता, जो सत्य-विज्ञान की दृष्टि से सिद्ध होने का दावा करता हो।

आर्य समाज का शैथिल्य

ऐसा दावा **ऋषि दयानन्द** ने किया था कि वैदिक धर्म व वेद ही समस्त विज्ञान का मूल स्रोत है तथा यही धर्म सनातन व सार्वभौमिक मानव धर्म है परन्तु ऋषि के अनुयायी ऐसा करने का सामर्थ्य प्राप्त नहीं कर सके और वे आर्य समाज को भी एक सम्प्रदाय बना बैठे, जिसमें प्राचीन अधिकांश महर्षियों, देवों आदि को भी सर्वथा भुला दिया गया। ऐसे विद्वान् आज इस समाज में भी पूजे जा रहे हैं, जो युवा पीढ़ी को अपने इतिहास के प्रति भी शंकित करके स्वयं ही प्रसिद्ध होने का प्रयत्न कर रहे हैं। **जिस आर्य समाज को कभी अमरीकी विद्वान् एण्ड्र्यू जैक्सन ने एक ऐसी अग्नि बताया था, जो सम्पूर्ण विश्व के दोषों, पापों व अज्ञान को नष्ट करने में सक्षम था, वह आर्य समाज स्वयं वेदादि शास्त्रों के विषय में ऋषि दयानन्द की दृष्टि से दूर हो गया। वेदविद्या की जो अग्नि ऋषि दयानन्द के हृदय में जलती थी, वह अग्नि स्वतंत्रता संग्राम, समाज सुधार, अन्धविश्वास निर्मूलन तक ही सिमट कर रह गयी** साथ ही वेदविद्या रूपी प्रेरक उद्गम के अभाव में यह अग्नि इन सुधारों के उद्देश्यों से दूर हो गयी तथा अन्य अनेक पूर्वोक्त पार्श्व दुष्प्रभावों का जन्म हो गया।

इस विचार को मैं हृदय में वर्षों संजोए रहा। मेरे मत में ऋषि दयानन्द जहाँ महान् राष्ट्रवादी थे, वहीं मानवता एवं विश्व बन्धुत्व के प्रामाणिक पुरोधा भी थे। वे जहाँ महान् वीतराग योगी थे, वहीं वे महान् समाज सुधारक एवं लौकिक विद्याओं के प्रबल पक्षधर थे। वे जहाँ आध्यात्मिक विद्या के महान् आचार्य थे, वहीं पदार्थ विद्या के यथार्थ पक्षधर थे, वे जहाँ यज्ञ व इसके द्वारा पर्यावरण शोधन के प्रबल प्रस्तोता थे, वहीं उद्योग, कृषि आदि के द्वारा आर्थिक क्रान्ति के प्रबल समर्थक। सारांशतः उनकी दृष्टि बहुआयामी थी क्योंकि उनके मस्तिष्क में वेद के यथार्थ ज्ञान की ज्योति विद्यमान थी, जो इन सभी क्षेत्रों में उन्हें सतत प्रेरणा दिया करती थी। वे केवल वेद व आर्ष विद्या के बल पर ही भारत ही नहीं अपितु विश्व का सर्वांगीण उन्नयन करना चाहते थे, परन्तु उनके अनुयायियों ने उनकी दृष्टि का समुचित आदर व उपयोग नहीं किया, भले ही उन्होंने बड़े-२ त्याग, तप, बलिदान व पुरुषार्थ के प्रमाण प्रस्तुत किए। राष्ट्र को अंग्रेजों की दासता से मुक्त करने तथा अनेक सामाजिक सुधार करने में भारी पुरुषार्थ किया।

ऋषि प्रेरणा व मेरा संकल्प

महर्षि दयानन्द का स्वप्न था कि उनके वेदभाष्य से भूमण्डल में ऐसी विद्या का प्रकाश होगा, जिसे मिटाने वा चुनौती देने का किसी का सामर्थ्य नहीं होगा परन्तु दैव दुर्योग से उन्हें अनेक बाधाओं से जूझना पड़ा, अनेक दिशाओं में कार्य करना पड़ा, अनेक बार विषपान करना पड़ा, इस कारण वे अपना वेदभाष्य पूर्ण नहीं कर सके और जो किया, वह भी सांकेतिक रह गया। मैंने इस बिन्दु पर गहराई से विचारा तथा वर्तमान भौतिक विज्ञान पर भी गहराई से चिन्तन किया। अपने परिचय में दर्शाये अनेक भौतिक वैज्ञानिकों से वर्षों संवाद किया, विज्ञान की समस्याओं एवं सीमाओं को गहराई से समझने का प्रयास किया। मेरे मस्तिष्क में यह अनुभव किया कि परमात्मा की कृपा से मैं ऋषि के स्वप्न को पूर्ण करने की दिशा में समर्थ हूँ और मुझे इसी दिशा में कार्य करना चाहिए। तभी **मैंने महाशिवरात्रि वि.सं. २०६२ तदनुसार २६ फरवरी २००६ को संकल्प लिया कि मैं आगामी बारह वर्षों में वेद की ईश्वरीयता तथा सर्वविज्ञानमयता को संसार के विकसित देशों के वैज्ञानिकों के समक्ष सिद्ध कर दूंगा** अन्यथा शरीर को त्याग दूंगा। मेरे शरीर त्याग के संकल्प से कुछ हितैषी आर्य विद्वानों में खलबली मची और उनमें से श्री डॉ. सुरेन्द्रकुमार (मनुस्मृति के भाष्यकार) मेरे पास आकर इस संकल्प को संशोधित कर वापिस लेने का दबाव डाला। उनके कुछ तर्क, जो लोकहितकारी प्रतीत हुए, को स्वीकार करके संकल्प में कुछ

संशोधन करके समय सीमा ३ वर्ष बढ़ा दी तथा शरीर त्याग के स्थान पर इस न्यास (ट्रस्ट) के त्याग का संकल्प लिया। मैं अपने संकल्प को साकार करने हेतु एकाकी अध्ययन करते-२ इस अनुभव पर पहुँचा कि शास्त्रों को समझने में हमारे विद्वानों से भी भारी भूलें हुई हैं। अध्ययन क्रम में जब ऐतरेय ब्राह्मण की बारी आई तो इस विचित्र व रहस्यमय ग्रन्थ को देखकर मैं भयभीत व चिन्तित हो उठा। इस ग्रन्थ का पार पाये बिना अपने संकल्प को पूर्ण करने की कल्पना भी नहीं हो सकती थी। अस्तु **परमगुरु परमात्मा की कृपा व प्रेरणा से मैंने इस ग्रन्थ का सम्पूर्ण वैज्ञानिक व्याख्यान कर लिया। इस ग्रन्थ के व्याख्यान में मेरा मार्गदर्शक परमगुरु परमपिता परमात्मा ही है। इसके अतिरिक्त पुस्तक गुरु के रूप में महर्षि दयानन्द सरस्वती, जिनके वेदभाष्यों, सत्यार्थ प्रकाश व ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रन्थों का प्रचुर प्रयोग किया है। ''वेदविज्ञान-आलोक'' नाम से प्रकाशित इस ग्रन्थ के बारे में यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त समझता हूँ कि यह ग्रन्थ विश्वभर के वेदविद्या अनुसंधानकर्ताओं तथा वर्तमान भौतिक वैज्ञानिकों को अनुसंधान की एक नयी दिशा व पद्धति प्रदान करेगा, जिससे उन्हें अब तक हो रही भूलों व समस्याओं को दूर करने का एक सुखद प्रकाशमय मार्ग प्राप्त होगा।** मैंने वेदानुसंधान व वेदाध्ययन की २-३ हजार वर्ष पुरानी परम्परा को नकारा ही नहीं अपितु उनका अन्त्य परीक्षण भी किया है। मैंने कुछ वेदमंत्रों के देवताओं को बदलने का भी साहस किया है। सुधी पाठक, इसकी परीक्षा स्वयं कर सकते हैं। इस व्याख्यान के लिये भूमि व कच्चा माल आचार्य सायण ने प्रदान किया, तो दृष्टि व बुद्धि ऋषि दयानन्द ने। अन्य अनेक ऋषि मुझे अपने भिन्न-२ ग्रन्थों के द्वारा नाना प्रकाशित मार्ग दिखाते रहे, उधर सबके परमगुरु परमपिता परमात्मा के ध्यान, मनन व चिन्तन से मुझे वेदविज्ञान के ऐसे रहस्य अनायास ही खुलते दिखाई दिए, जिनकी कभी कल्पना नहीं की थी। यदि मुझे आचार्य सायण का भाष्य नहीं मिलता, तो मैं ऐतरेय ब्राह्मण के उनके भाष्य में उद्धृत अनेक आर्ष ग्रन्थों के उद्धरणों एवं वेदमंत्रों आदि से परिचित नहीं हो सकता था, जिससे मेरा भाष्य संक्षिप्त एवं अप्रामाणिक ही रहता। डॉ. सुधाकर मालवीय के हिन्दी अनुवाद से भी मुझे कुछ पदों को समझने का लाभ तो मिला ही। मैंने अपनी पूर्वपीठिका में सायण व मालवीय के भाष्य वा अनुवाद को उदाहरण के रूप में उद्धृत किया है और अपना भाष्य भी प्रस्तुत किया है, पाठक उसकी तुलना स्वयं करें। मेरा दृढ़ मत है कि सायण आदि आचार्यों की व्याख्यान शैली अत्यन्त आपत्तिजनक, मिथ्या एवं अज्ञानतापूर्ण है। इस शैली ने वेद एवं आर्ष ग्रन्थों को संसार में घोर अपयश प्रदान किया है। इसी ने विश्व में मांसाहार, पशुबलि, मदिरा एवं व्यभिचार आदि दोषों का प्रचार किया है। मैं इस भाष्य की कड़े शब्दों में निन्दा करते हुए भी इतना तो स्वीकार करता हूँ कि उन्होंने शास्त्रों को सुरक्षित रख लिया। इस एक हेतु से उनके प्रति धन्यवाद एवं आभार व्यक्त करता हूँ। भले ही उन्हें वेदादि शास्त्रों के विज्ञान की वर्णमाला का भी ज्ञान नहीं था पुनरपि शास्त्रों को बचाये रखा, यह भी एक उपकार है, भले ही उसके साथ अनेक अपकार भी जुड़े हैं। **मेरा मत है कि ऋषि दयानन्द की दृष्टि के अभाव में संसार का कोई भी विद्वान् वेद तथा आर्ष ग्रन्थों का यथार्थ विज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। महर्षि जैमिनी** के पश्चात् इस भूतल पर **ऋषि दयानन्द** ही एकमात्र व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने वेद को यथार्थ दृष्टि से देखा। मेरा रोम-रोम **ऋषि दयानन्द** के प्रति कृतज्ञ है। मैं उनकी दृष्टि से ही वेद तथा **महर्षि भगवान् ब्रह्मा** से चली आ रही महान् वैदिक परम्परा के अनेक ऋषियों के महान् विज्ञान को समेटे **महर्षि ऐतरेय महीदास** के इस महान् वैज्ञानिक ग्रन्थ को समझने में समर्थ हुआ हूँ। मैं संस्कृत भाषा, अंग्रेजी भाषा एवं विज्ञान का विधिवत् वा पूर्ण अध्ययन नहीं कर सका हूँ पुनरपि दोनों ही क्षेत्रों में मैंने विश्व को एक नयी दिशा देने का व्रत लिया और ईश्वर की कृपा से मैं अपने ग्रन्थ के माध्यम से स्वयं को व्रतपूर्ण करने में सफल वा सक्षम मान रहा हूँ।

इस व्याख्यान ग्रन्थ के तीन भाग हैं-

1. प्रमाण भाग

इस भाग में ऐतरेय ब्राह्मण अथवा वेद की उन ऋचाओं, जो इस ग्रन्थ में प्रयुक्त हुई हैं, के विभिन्न पदों के आर्ष निर्वचनों के संदर्भ तथा ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य में दिये अर्थों का संग्रह किया है। मैंने इन्हीं के आधार पर व्याख्यान करने का प्रयास किया है। इस ग्रन्थ में चार वेद संहिताओं, वेद भाष्य, विभिन्न ६२ आर्ष ग्रन्थों सहित कुल ६५ ग्रन्थों एवं ३० उच्च स्तरीय आधुनिक भौतिक विज्ञान के ग्रन्थों तथा शब्द कोषों को उद्धृत किया गया है।

2. व्याख्यान भाग

इस भाग में कण्डिकाओं पर अपना व्याख्यान किया है। मैंने प्रमाण भाग के प्रमाणों का कैसे उपयोग अपने व्याख्यान में किया है, यह नहीं दर्शाया है किन्तु प्रतिभासम्पन्न पाठक इस बात को व्याख्यान भाग को गम्भीरता से पढ़कर अनुभव कर सकेंगे, यह मुझे विश्वास है। यदि मैं प्रमाणों के उपयोग करने की प्रक्रिया को स्पष्ट करता, तो व्याख्यान भाग लगभग दो गुना तो हो ही जाता। उधर मैंने इस ग्रन्थ में सैकड़ों वेदमंत्रों का सृष्टि पर प्रभाव भी अति संक्षेप में दर्शाया है। वस्तुतः उन ऋचाओं का प्रभाव बहुत विस्तृत दर्शाया जा सकता था। मैंने पूर्वपीठिका में ६ मंत्रों का त्रिविध भाष्य एवं उनका सृष्टि पर प्रभाव ग्रन्थ के व्याख्यान में दर्शाए प्रभाव से अधिक विस्तार से दिया है किन्तु वह भी पूर्ण नहीं है। ऋचा के प्रत्येक पद का पृथक्-२ व्याख्यान व प्रभाव दर्शाया जा सकता था। **महर्षि ऐतरेय महीदास** ने इस ग्रन्थ में स्वयं अनेक ऋचाओं का व्याख्यान किया है, जिसे भाष्यकारों ने अपने याज्ञिक अर्थ में रूढ़ कर दिया है, जिसका कोई महत्व नहीं है। मैंने **महर्षि ऐतरेय महीदास** के व्याख्यानों पर अपना वैज्ञानिक व्याख्यान करके ऋचाओं का सृष्टि पर प्रभाव दर्शाया है। वह प्रभाव पूर्वपीठिका में मेरे द्वारा दिये गये प्रभावों से भी बहुत विस्तृत है। इसे पाठक ऐतरेय खण्ड ४.२० के व्याख्यान में स्वयं अनुभव कर सकते हैं। **यदि मैं इस प्रकार प्रति पद का भाष्य करके प्रभाव दर्शाता, तो यह ग्रन्थ कम से कम दो तीन गुने आकार का हो जाता तथा इसमें कम से कम ५-७ वर्ष समय और लग जाता।** उधर मैं संकल्प की सीमा से बंधा था। अस्थिर स्वास्थ्य से पीड़ित रहा। आयु का ५५ वां वर्ष व्यतीत हो चुका है। इनमें से सन् १९८५-८८ के मध्य केवल लगभग ३ वर्ष ही ऐसे व्यतीत हुए, जब मैं स्वयं को स्वस्थ अनुभव करता था। ऐसी विषम परिस्थिति के कारण ऐसा भाष्य करने की मेरी इच्छा मन में ही रह गयी। हाँ, इतना अवश्य है कि **मेरे ग्रन्थ में विश्व के वेदज्ञों को वेदमंत्रों के स्वरूप व सृष्टि प्रक्रिया पर प्रभाव का एक नूतन प्रकाश अवश्य मिलेगा, जिसके आश्रय पर वे वेद विद्या के रहस्यों को दूर तक देखने में भविष्य में समर्थ होंगे।** यहाँ मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि मैंने ऋचाओं का सृष्टि प्रक्रिया पर जो प्रभाव दर्शाया है, उसके अतिरिक्त प्रभाव भी होता है, इसे सुविज्ञ पाठक स्वयं देख सकते हैं। मैंने चिन्तन के प्रवाह में समय सीमा को ध्यान में रखकर जितना-२ मस्तिष्क में आया, लिखता गया। विद्वान् पाठक स्वयं भी कुछ चिन्तन करने का प्रयत्न करें।

3. वैज्ञानिक भाष्यसार

साधारण पाठक अथवा केवल वैज्ञानिकों के लिए यह सार रूप में लिखा गया है। जो इस ग्रन्थ की गम्भीर विद्या को समझने की क्षमता नहीं रखते हों तथा जिन्हें संस्कृत भाषा का कोई ज्ञान नहीं हो, वे इस भाष्यसार से महती वेदविद्या के कुछ संकेतों को प्राप्त कर सकते हैं। हाँ, इतना अवश्य है कि कहीं कहीं वे व्याख्यान भाग को पढ़े व समझे बिना भाष्यसार से कोई विशेष निष्कर्ष प्राप्त नहीं कर सकते हैं, तो कहीं-२ जो विषय व्याख्यान भाग में सामान्य प्रतिभा वाले पाठकों को स्पष्ट नहीं होते हैं, वे भाष्यसार में स्पष्ट हो सकेंगे।

व्याकरणादि शास्त्रों के परम्परागत विद्वान् मेरे व्याख्यान को पढ़कर यह अनुभव करेंगे कि उन्हें अपने ज्ञान का उपयोग कैसे करना चाहिए? व्युत्पत्ति व निर्वचन विद्या की वैज्ञानिकता का उन्हें इस ग्रन्थ में पदे-२ बोध होगा। ब्राह्मण ग्रन्थों की महती वैज्ञानिकता का उन्हें अवश्य बोध होगा।

ग्रन्थ में ऋचाओं के प्रभाव को पढ़कर पाठकों के मन में प्रश्न उठेगा कि इन प्रभावों में ''विद्युत् की समृद्धि, प्रकाश व ऊष्मा की समृद्धि, इन्द्र तत्व की प्रबलता, संयोज्यता में वृद्धि'' जैसे प्रभावों की पुनरुक्ति बहुलता से हुई है। इससे पाठकों को अरुचि भी हो सकती है। उन्हें कुछ ऐसा भी प्रतीत होगा कि वेदमंत्रों की अपेक्षा कण्डिकाओं का व्याख्यान अधिक गम्भीर एवं सारगर्भित है। इस विषय में मैं पाठकों को प्रथम तो अवगत करना चाहूंगा कि यह ग्रन्थ ऐतरेय ब्राह्मण का व्याख्यान है, न कि वेद का, इस कारण इस ब्राह्मण की कण्डिकाओं का व्याख्यान ही प्राथमिकता के साथ किया गया है। रसायन विज्ञान के विद्यार्थी इस बात से अवगत हैं कि जब किसी अयस्क को पिघलाकर किसी धातु को शुद्ध रूप में पृथक् किया जाता है, उस समय अन्य कोई भी धातु, वह भले ही मूल्यवान् हो, की उपेक्षा करके छोड़ दिया जाता है। इसी प्रकार हमारा उद्देश्य ऐतरेय ब्राह्मण का व्याख्यान करना रहा है। वेद की ऋचाओं का तो केवल प्रभाव मात्र दर्शाना, वह भी संक्षेप में उद्देश्य रहा है और इतना ही पर्याप्त भी है। अब

रही बात प्रभाव की पुनरुक्ति की, तद् विषय में ज्ञातव्य है कि इस सृष्टि में जब कोई क्रिया होती है, तब असंख्य प्रकार की रश्मियों की आवृत्ति निरन्तर होती रहती है। इन आवृत्तियों के सम्मिलित प्रभाव से ही वह प्रभाव दृढ़ व पर्याप्त हो पाता है। जब हम किसी ईंधन को जलाते हैं, अथवा बल्ब को जलाते हैं, तब क्या हम जानते हैं कि ज्वलन वा प्रकाशन की इस प्रक्रिया में कितनी प्रकार की तरंगें बार-२ आवृत्त होकर कितनी प्रकार की क्रियाओं को पुनरावृत्त करती हैं। उसके पश्चात् ही हमें ऊष्मा व प्रकाश का प्रभाव व अस्तित्व दिखाई देता है। यही स्थिति समस्त ब्रह्माण्ड में निरन्तर बनी रहती है। आशा है पाठक इस संकेत को समझ गये होंगे।

यह ग्रन्थ अनेक बुद्धिमान् पाठकों को भी अति क्लिष्ट प्रतीत होगा परन्तु इस विषय में मैं निवेदन करना चाहूंगा कि **जो वेदविद्या लगभग पांच हजार वर्षों से विलुप्त हो चुकी थी, उसे सहसैव कोई प्रकाशित करे, उसका वह रूप रूढ़ परम्परा वाले विद्वानों को क्लिष्ट व विचित्र ही नहीं अपितु काल्पनिक भी प्रतीत होगा। फिर विज्ञान को विज्ञान की भाषा में ही लिखा जा सकता है।** उस विज्ञान से अनभिज्ञ पाठकों को मैं यही निवेदन करूंगा कि धैर्यपूर्वक बार-२ पढ़कर समझने का प्रयास करें। **यह ग्रन्थ उन्हीं पाठकों के लिए है, जो संस्कृत व्याकरण के साथ-२ थ्योरिटीकल फिजिक्स में अच्छे स्तर पर M.Sc. वा Ph.D. हों। केवल परम्परागत पद्धति से पढ़े वेदानुसंधाताओं, व्याकरण, निरुक्त व दर्शन के अध्येताओं को बिना भौतिक विज्ञान के गम्भीर ज्ञान के कुछ भी हाथ नहीं लगेगा।** उधर जो भौतिक विज्ञानी संस्कृत व्याकरण व भाषा का कुछ भी ज्ञान नहीं रखते, वे इस ग्रन्थ से बहुत लाभ उठा सकते हैं पुनरपि उन्हें ऐतरेय ब्राह्मण के सम्पूर्ण विज्ञान का बोध नहीं होगा और न उन्हें यह समझ आ सकेगा कि मैंने यह व्याख्यान कैसे किया है और न वे मेरी भांति अन्य आर्ष ग्रन्थों वा वेदों के विज्ञान को समझ पाएंगे। हाँ, यह भी सत्य है कि संस्कृत व्याकरण निरुक्तादि शास्त्रों के साथ-२ थ्योरिटीकल भौतिकी का प्रतिभाशाली विद्वान् भी बिना लेखक (मुझसे) से पढ़े सम्पूर्ण व्याख्यान को हृदयंगम करके अन्य ब्राह्मण ग्रन्थों वा वेदमंत्रों का भाष्य कर ले, यह भी अति दुष्कर है, पुनरपि वे इस दिशा में विशिष्ट ऊहा, साधना व निष्पापहृदयता के बल पर आगे बढ़ अवश्य सकते हैं और धीरे-२ सफलकाम भी हो सकते हैं। इस ग्रन्थ का सम्पादन मेरे सुयोग्य शिष्य प्रिय विशाल आर्य (अग्नियश वेदार्थी), जिनका कुछ परिचय मैंने अपने परिचय के साथ लिखा है, ने किया है। उन्होंने इस पुस्तक में अनेकों महत्वपूर्ण चित्र बनाये हैं। इन चित्रों से सुविज्ञ पाठक विषय को अच्छी प्रकार समझ सकेंगे। ये चित्र विश्व के भौतिक विज्ञानियों के लिए आश्चर्यप्रद होंगे। यदि प्रिय विशाल आर्य (अग्नियश वेदार्थी) ये चित्र न बनाते, तो यह ग्रन्थ इतने सुन्दर रूप में पाठकों को उपलब्ध न हो पाता। इन्होंने जिस योग्यता, लगन, निष्ठा और परिश्रम से ये चित्र बनाये हैं तथा भौतिक विज्ञान की अनेक गम्भीर समस्याओं को मेरे ध्यान में लाया है, अनेक गम्भीर प्रश्न मुझसे पूछे हैं, उसके कारण मैंने उन समस्याओं को सुलझाया एवं प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में दिया है, इससे ग्रन्थ का महत्व अपेक्षाकृत बढ़ गया है। इस ग्रन्थ की सम्पूर्ण साज-सज्जा भी इन्हीं की प्रतिभा व लगन का परिणाम है। इसके लिए मैं इन्हें हृदय से भूरिशः आशीर्वाद देता हूँ। इस ग्रन्थ के ईक्ष्यवाचन में श्री राजाराम सोलंकी, श्री नेथीराम चौधरी, श्री सुमित शास्त्री, श्री ब्र. राजेश आर्य एवं ब्र. जी. विश्वदेश ने बहुत परिश्रम किया है। इनके पश्चात् अन्त में मैंने स्वयं ईक्ष्यवाचन किया है पुनरपि इतने बड़े ग्रन्थ में त्रुटियां रह जाना सम्भव है। पाठक ऐसी त्रुटियों की ओर ध्यान दिलायेंगे तो कभी अगला संस्करण प्रकाशित होने पर उन पर विचार करके उचित संशोधन करने का प्रयास रहेगा।

वेद व आर्ष ग्रन्थों की महत्ता

प्रिय पाठकगण! ब्राह्मण ग्रन्थों का प्रतिपाद्य विषय क्या है? यह पूर्वपीठिका में पढ़ ही सकते हैं। यहाँ संक्षेप में इतना कहना है कि **वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ अथवा अन्य आर्ष ग्रन्थ ऐसी विद्या के भण्डार हैं, जिन पर समूची मानव सभ्यता का साझा अधिकार है तथा सम्पूर्ण प्राणिजगत् के लिए समान रूप से हितकारी है। वेद तो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में विद्यमान बुद्धिमान् जीवों के लिए समान रूप से पठनीय व आचरणीय हैं।** वेद सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का ग्रन्थ है तथा वैदिक संस्कृत भाषा ब्रह्माण्ड की भाषा है, इस बात का प्रमाण पाठकों को इस ग्रन्थ के पढ़ने से मिल जायेगा। ऐसी स्थिति में इस ग्रन्थ को मात्र राष्ट्रवाद से जोड़ना, इसके महत्व को कम करना ही होगा। **इतने पर भी यह सत्य है कि आर्यावर्त्त (भारत) वह देश है, जिसने अभी तक वैदिक साहित्य को बचा कर रखा है।** विश्व में अन्यत्र कहीं भी जो भी वैदिक

साहित्य विद्यमान है, यह भारतवर्ष से ही ले जाया गया है। इसी साहित्य के बल पर **हमारे राष्ट्र की संस्कृति, सभ्यता, ज्ञान-विज्ञान व इतिहास की एक ऐसी महती धरोहर है, जिस पर हम भारतवासी सदैव से स्वाभिमान करते रहे हैं। दुर्भाग्य से आज वही समृद्ध, जगद्‌गुरु, चक्रवर्ती भारत देश बौद्धिक दासता से पीड़ित है।**

इस ग्रन्थ की उपादेयता

मेरे इस भाष्य से प्रत्येक प्रबुद्ध भारतीय में प्रखर राष्ट्रिय स्वाभिमान जगेगा, बौद्धिक दासत्व सदैव के लिए मिट जायेगा, भारत पुनः संसार के ज्ञान विज्ञान का केन्द्र बन कर उभरेगा। विश्व एक वैदिक मंच पर आकर वैदिक परिवार की भांति रहने के उपाय जानेगा। वेदों के साथ-२ सभी आर्ष ग्रन्थों की विश्व में प्रतिष्ठा होगी। **आज अनेक देशी वा विदेशी वेदानुसंधाता वेदों का अनर्थ करके उन पर तथा ऋषियों, देवों व भारतीय प्राचीन संस्कृति, इतिहास व सभ्यता पर अनेक दोषारोपण करते हैं, उन्हें इस ग्रन्थ के पढ़ने के पश्चात् अपनी अज्ञानता का अवश्य बोध होगा, ऐसा मेरा दृढ़ मत है। वे अपने ग्रन्थों, प्रवचनों, लेखों, इलेक्ट्रॉनिक व प्रिंट मीडिया में अपने विचारों का भ्रामक विचारों का प्रचार करना न केवल भूल जाएंगे, अपितु उन्हें अपने कृत्य पर पश्चाताप भी होगा। वर्तमान भटकता हुआ विज्ञान वैदिक विज्ञान के रूप में एक नवीन प्रकाश स्तम्भ को प्राप्त करके सृष्टि के गूढ़ रहस्यों को समझकर भोगवाद से अध्यात्मवाद की ओर अग्रसर होगा।** वर्तमान भौतिक वैज्ञानिक व उच्च प्रबुद्धजनों का न केवल यह भ्रम निर्मूल हो जायेगा कि वेद व ऋषियों के ब्राह्मणादि ग्रन्थ केवल कर्मकाण्ड के भ्रामक विचारों के ग्रन्थ हैं तथा वर्तमान भौतिक विज्ञान ही परम प्रमाण वा ध्रुव सत्य है, अपितु उनका शिर इस महान् वैदिक विज्ञान के सम्मुख श्रद्धा से झुक जायेगा और **वे वेदों व ऋषियों के ग्रन्थों को मानवता की महती वैज्ञानिक धरोहर मानकर पढ़ने एवं उन पर अनुसंधान करने को प्रवृत्त होंगे।** मानव निरापद एवं अति आवश्यक होने पर ही तकनीक का आविष्कार करेगा, गलाकाट प्रतिस्पर्धा समाप्त होकर संसार के मानव परस्पर **'जीओ और जीने दो'** के सूत्र पर संसार में मिलकर चलेंगे। मांसाहार, यौन उच्छृंखलता, मदिरादि बुद्धिनाशक पदार्थों का सेवन, अपराध, मिथ्या छलकपट, पाखण्ड, अन्धविश्वास, साम्प्रदायिकता, जातिगत भेदभाव, अराजकता आदि पापों को दूर करके यह मानवजाति अहिंसा, सत्य, त्याग, प्रेम, मैत्री, न्याय के मार्ग पर चलकर विश्व शान्ति की ओर अग्रसर होगी।

कुछ विद्वान् पाठक इस ग्रन्थ में दोषों को ही ढूंढेंगे और उन्हें कदाचित् गुण नहीं दिखाई देंगे, क्योंकि वर्तमान रागद्वेषादि के वातावरण में यह स्वभाव सामान्य हो गया है। मैं उन पाठकों से इतना निवेदन करूंगा कि वे ऐतरेय ब्राह्मण के मूल को पढ़ें और उस पर स्वयं अपनी बुद्धि से व्याख्यान करने का प्रयास करें, अपने व्याकरण, निरुक्त वा दर्शनादि शास्त्रों के ज्ञान की परीक्षा करें। अपने गुरुजनों को भी दिखाएं, उनसे भी व्याख्यान कराने का प्रयास करवाएं। उसके पश्चात् ही इस ग्रन्थ की क्लिष्टता अनुभव होगी। **मैंने हजारों वर्ष पुरानी इस वेदविद्या के कपाटों को खोला है। विश्व में प्रथम बार वैज्ञानिक व्याख्यान मैंने ही किया है, वह भी बिना किसी की सहायता के। परमपिता परमात्मा के अतिरिक्त इस कार्य में मेरा कोई गुरु वा मार्गदर्शक नहीं है।** इस कारण ग्रन्थ में कुछ न्यूनताएं रहना सम्भव है। मैं प्रयास करूंगा कि प्रिय विशाल आर्य (अग्नियश वेदार्थी) आदि को इस ग्रन्थ को पढ़ाते समय उन न्यूनताओं को पहचाना जाए, तब उनको दूर करने हेतु पृथक् ग्रन्थ लिखने का विचार किया जायेगा। मैंने कुछ वर्ष पूर्व इस ग्रन्थ का रफ व्याख्यान करने के उपरान्त **''मेरी प्रथम दृष्टि में - ऐतरेय ब्राह्मण विज्ञान''** नामक पुस्तक लिखी थी। उसमें एक सौ प्रश्न वर्तमान विज्ञान विषयक तथा ४३ प्रश्न वेद सम्बन्धित थे और ऐतरेय ब्राह्मण के वैज्ञानिक व्याख्यान द्वारा उनका उत्तर देने का विचार व्यक्त किया था। मैं पाठकों को अवगत कराना चाहता हूँ कि उनमें से कुछ प्रश्न आज विशेष महत्व के प्रतीत नहीं होते, शेष सभी प्रश्नों के अतिरिक्त Theoretical physics के अनेक सम्भावित प्रश्नों का उत्तर भी प्रतिभाशाली पाठक इस ग्रन्थ में प्राप्त कर सकते हैं। पृथक् से इनका उत्तर लिखने का मुझे अवकाश नहीं मिला और **मैं यह भी चाहता हूँ कि पाठक इस सम्पूर्ण ग्रन्थ को स्वयं पढ़ें, जिससे न केवल उन प्रश्नों का उत्तर मिलेगा, अपितु उन्हें ईश्वर का भी यथार्थ बोध होगा, जिससे उनमें अध्यात्म वा नैतिकता आदि सद्‌गुणों का विकास होगा, अन्यथा वे केवल भौतिक विज्ञान सम्बन्धी लाभ लेकर वेदविद्या का उसी प्रकार दुरुपयोग कर सकते हैं, जिस प्रकार वर्तमान विज्ञान व तकनीक का दुरुपयोग हो रहा है। मैं नहीं चाहता कि यह कलंक वेदविद्या पर भी लगे।** इसीलिए पाठकों को इतना परिश्रम तो करना ही चाहिए

और **धार्मिक विज्ञान एवं वैज्ञानिक धर्म** के मार्ग पर चलकर इस महान् विज्ञान का लोक कल्याण हेतु ही उपयोग करना चाहिए। पुनरपि यदि मैंने कभी आवश्यक व उचित समझा और स्वास्थ्य आदि की भी अनुकूलता रही तो, मैं अनेक प्रश्नों के विस्तृत उत्तर देने के लिए एक पृथक् पुस्तक लिखने पर विचार करूंगा।

अन्त में **मैं विश्वभर के विचारकों, वैज्ञानिकों, वेदानुसंधाताओं, धर्माचार्यों, राजनेताओं, उद्योगपतियों, समाजसेवियों, शिक्षाशास्त्रियों के साथ-२ भारत के सभी प्रबुद्ध नागरिकों, विशेषकर युवा पीढ़ी का आह्वान करता हूँ कि वे अपने प्रखर मस्तिष्क एवं उदार हृदय से इस ग्रन्थ को निष्पक्ष भाव से पढ़ने का श्रम करें।** सभी पूर्वाग्रहों, दुराग्रहों, प्रतिष्ठा व अन्य लोभादि को दूर रखकर यदि वे इस ग्रन्थ को पढ़कर समझ लेंगे, तो मुझे विश्वास है कि वे स्वयं इस ग्रन्थ को विश्व की एक महती धरोहर मानने को विवश होंगे। परमपिता परमात्मा, जिनकी महती कृपा व प्रेरणा से ही मैं इस ग्रन्थ को लिख सका हूँ, संसार के मनुष्यों में सत्य-मत का ऐसा अंकुर उत्पन्न करे कि असत्य का अंधकार मिटकर सत्य का सर्वत्र प्रकाश हो सके।

''असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्यो र्माऽमृतं गमयेति''

इसी कामना व भावना के साथ

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक
स्थान- वेद विज्ञान मंदिर,
भागल-भीम, भीनमाल

तिथि- कार्तिक कृ. अमावस्या
शारदीय नवसस्येष्टि (दीपावली)
महर्षि दयानन्दनिर्वाण दिवस
वि.सं. २०७४, दिनांक १९.१०.२०१७

ग्रन्थ को समझने हेतु आवश्यक जानकारी

वेदविज्ञान-आलोकः

- Volume 1
- Volume 2
- Volume 3
- Volume 4

पूर्वपीठिका

8 पञ्चिका → प्रत्येक में 5 अध्याय → कुल 40 अध्याय

3 परिशिष्ट
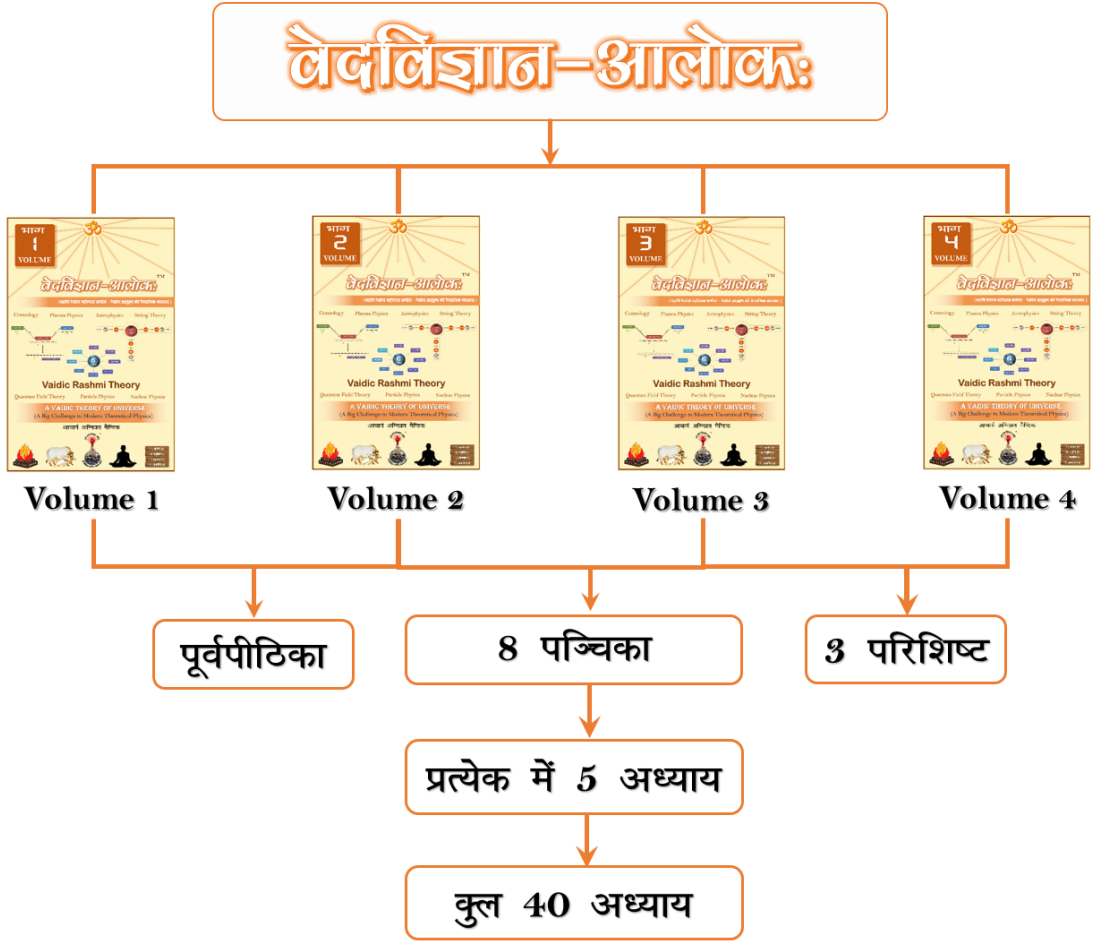
इस ग्रन्थ में कुल मिला कर 2800 पृष्ठ हैं।
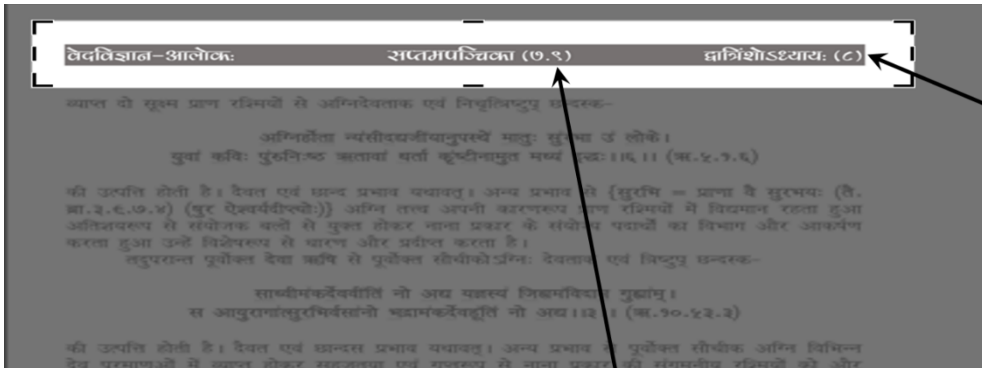
१. आप्रीभिराप्रीणाति।।
तेजो वै ब्रह्मवर्चसमाप्रियस्तेजसैवैनं तद् ब्रह्मवर्चसेन समर्धयति।।
समिधो यजति।।
प्राणा वै समिधः, प्राणा हीदं सर्वं समिन्धते यदिदं किंच, प्राणानेव तत्प्रीणाति, प्राणान् यजमाने दधाति।।

{आप्रियः = प्राणा वा आप्रियः (कौ.ब्रा.१८.१२), यदेता आप्रियो भवन्ति यज्ञमेवेताभिर्यजमान आप्रीणीते (मै.३.९.६), (आप्रियः) (ऋचः) तद्यद् आप्रीणाति तस्मादाप्रियो नाम (कौ.ब्रा. १०.३), आप्रीभिराप्नुवन् तदाप्रीणामाप्रीत्वम् (तै.ब्रा.२.२.८.६)}

व्याख्यानम्– उपर्युक्त प्रकरण में अग्नि व सोम मिश्रित पदार्थ एवं यूप रूप तरंगें जब परस्पर मिश्रित हो रही होती हैं, तब आप्री संज्ञक ११ ऋचाओं की उत्पत्ति होती है और वे ऋग्रूप तरंगें सम्पूर्ण नेब्यूला वा तारों में विद्यमान पदार्थ को व्याप्त और तृप्त करती हैं। यह आप्री संज्ञक सूक्त ऋ.१.१८८, माना जाता है, क्योंकि इसका देवता **'आप्रियः'** है। इस कारण यह अपने दैवत प्रभाव से सम्पूर्ण नेब्यूला वा तारे में सब ओर से व्याप्त हो जाती हैं।।

जब पूर्वोक्त सूक्तस्थ ग्यारह रश्मियों को उनकी उत्पत्तिकर्त्री गौरिवीति नामक पूर्वोक्त सूक्ष्म रश्मियों तथा इन रश्मियों से उत्पन्न किंवा उनके अनुचर व उनके द्वारा आकर्षित विभिन्न परमाणुओं से पृथक् करना हो, उस समय निविद् रश्मि के आदि व अन्त में २.३३.१ में वर्णित आहाव संज्ञक **'शोंसावोम्'** सूक्ष्म रश्मि को संगत कर दिया जाता है। इस प्रकार इस आहाव रश्मि सहित निविद् रश्मि के सूक्त की रश्मियों के अन्दर प्रक्षेपण से उनका सम्बन्ध उस ऋषि प्राण तथा विभिन्न संगत व अनुचर परमाणु समुदाय से टूट जाता है। इसके कारण वे पदार्थ केन्द्रीय भाग की ओर प्रवाहित नहीं हो पाते हैं। इन कण्डिकाओं में दर्शायी गयी व्यवस्था अभिचार अर्थात् प्रवर्तमान प्रक्रिया को रोकने अर्थात् उसका उल्लंघन करने के लिए है और इनसे पूर्व कण्डिकाओं में दर्शायी प्रक्रिया केन्द्रीय भागों के निर्माण के लिए है। यही भेद है।।+।।

भूमिका ⟶ पूर्वपीठिका ⟶ कण्डिकाओं का वैज्ञानिक व्याख्यान ⟶ वैज्ञानिक भाष्यसार

पाठक कृपया पुस्तक को इस क्रम में ही पढ़ें–

''ध्यान रहे कि पूर्वपीठिका पढ़े बिना ग्रन्थ कदापि समझ नहीं आयेगा।''

विशेष ज्ञातव्य–

१. इस ग्रन्थ में ऐतरेय के जिन प्रमाणों में तीन संख्याएं हैं, वे इसी ग्रन्थ के आधार पर पंचिका, खण्ड व कण्डिका समूह के रूप में दिये हैं। इन प्रमाणों में प्रायः 'ऐतरेय' शब्द भी नहीं दिया है, केवल संख्या दी है। जहाँ ऐतरेय के दो संख्याओं में प्रमाण दिए हैं, वहाँ पता मूल ग्रन्थ का समझें, जहाँ प्रथम संख्या पंचिका तथा द्वितीय संख्या खण्ड की दर्शायी है।
२. कहीं-२ कण्डिका में ( ) के अन्तर्गत कोई वर्ण वा शब्द दिया गया है। उसका तात्पर्य यह है कि हमने उससे मिलते-जुलते पूर्व वर्ण वा शब्द को अशुद्ध मानकर ( ) के अन्तर्गत अपने मतानुसार शुद्ध रूप में दर्शाया है, तथा मूलग्रन्थ के पाठ को यथावत् भी लिख दिया है। एकाध स्थान पर { } के अन्तर्गत

कोई शब्द वा वर्ण दिया है, वह सायण भाष्य के सम्पादक व हिन्दी अनुवादक डॉ. सुधाकर मालवीय का पाठ प्रतीत होता है। हमने तारा प्रिंटिंग वर्क्स, वाराणसी से प्रकाशित सायण भाष्य, जिसका डॉ. मालवीय ने हिन्दी अनुवाद किया है, का ही उपयोग किया है। उन्हीं के द्वारा उद्धृत पाठ को मूल पाठ के रूप में उद्धृत किया है।

भाग (VOLUME)

।। ओ३म् ।।

अथ पूर्वपीठिका

ओ३म्। भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।
ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रं तन्नऽआ सुव।।

विभिन्न ऋचाओं का प्रभाव, अन्य विद्वानों के एकल भाष्य से मेरे त्रिविध भाष्य की तुलना।

तो उन ध्वनियों को सुनना कदाचित् सम्भव है। वैदिक छन्द इन ध्वनि तरंगों से भी सूक्ष्मरूप में विद्यमान होते हैं। ऋग्वेद में वैदिकी वाक् को ग्रहण करने का सुन्दर विज्ञान इस प्रकार दर्शाया है-

वेद का प्रादुर्भाव

बृह॑स्पते प्रथ॒मं वा॒चो अग्रं॒ यत्प्रैर॑त नाम॒धेयं॒ दधा॑नाः।
यदे॑षां॒ श्रेष्ठं॒ यद॑रि॒प्रमासी॑त्प्रे॒णा तदे॑षां॒ निहि॑तं॒ गुहा॒विः।।१।।

सक्तु॑मिव॒ तित॑उना पु॒नन्तो॒ यत्र॒ धीरा॒ मन॑सा॒ वाच॒मक्र॑त।
अत्रा॒ सखा॑यः स॒ख्यानि॑ जानते भ॒द्रैषां॑ ल॒क्ष्मीर्निहि॒ताधि॑ वा॒चि।।२।।

य॒ज्ञेन॑ वा॒चः प॑द॒वीय॑माय॒न्तामन्व॑विन्द॒न्नृषि॑षु॒ प्रवि॑ष्टाम्।
ताम॒भृत्या॒ व्य॑दधुः पुरु॒त्रा तां स॒प्तरे॒भा अ॒भि सं न॑वन्ते।।३।। (ऋ.१०.७१.१-३)

इन ऋचाओं से अग्न्यादि चार ऋषियों के द्वारा वैदिकी वाक् ग्रहण करने का गम्भीर विज्ञान इस प्रकार प्रकाशित होता है-

बृहस्पति अर्थात् विशाल ब्रह्माण्ड के पालक व रक्षक परमात्मा की प्राथमिक व विस्तृत वेद वाणी पदार्थमात्र तथा उनके व्यवहारों को धारण करती है। वे ही ऋचाएं बाधक पदार्थों से मुक्त शुद्धावस्था में ऋषियों के गुहा रूप हृदय में प्रकट होती हैं।।

वे ऋचाएं जब आकाश में व्याप्त रहती हैं, तब वे ऋषि चालनी में सत्तू के समान अपने योगारूढ़ मन के द्वारा छानकर पवित्र करते हुए उन ऋचाओं को अपने अन्दर धारण करते हैं।।

वे ऋचाएं यज्ञ रूपी परमात्मा के सहाय से क्रमशः उन ऋषियों में प्रविष्ट होती हैं। इसके पूर्व वे ऋचाएं अन्तरिक्षस्थ ऋषि रूप प्राण रश्मियों के अन्दर छन्दरूप में विद्यमान रहती हैं।।

इन मंत्रों से स्पष्ट होता है कि आकाश में अनेक ऋचाएं छन्दरूपी प्राण रश्मियों के रूप में उत्पन्न होकर विद्यमान रहती हैं, तब **अग्नि, वायु, आदित्य** व **अंगिरा** ऋषि समाधि अवस्था में परमात्मा की कृपा से **उन अन्तरिक्षस्थ ऋचाओं में से मानव जीवन हेतु आवश्यक ऋचाओं को समाहित चित्त द्वारा छान-२ कर अपने चित्त में संगृहीत करते हैं।** वे ऋचाएं ही क्रमशः **ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद** और **अथर्ववेद** का रूप होती हैं। ये चारों ऋषि न केवल उन ऋचाओं का संग्रह करते हैं, अपितु परमात्मा की कृपा से वे ऋषि उन ऋचाओं अर्थात् वाणियों के अर्थ को भी समझ लेते हैं। वे चारों ऋषि इस ज्ञान को महर्षि आद्य ब्रह्मा को प्रदान करते हैं। इस प्रकार संसार में आगे ज्ञान का प्रवाह चलता रहता है।

प्रश्न- अग्नि, वायु, आदित्य एवं **अंगिरा** नामक ऋषि क्या इसी सृष्टि में उत्पन्न हुए किंवा प्रत्येक सृष्टि में इन्हीं नाम के ऋषि ही वेद को ग्रहण करते हैं?

उत्तर- हमारे मत में प्रत्येक सृष्टि के प्रारम्भ में जिन चार ऋषियों के द्वारा आकाश से वैदिक छन्दों को ग्रहण किया जाता है, उनके ये ही नाम होते हैं। ये नाम रूढ़ नहीं, बल्कि योगरूढ़ हैं।

वाणी के चार प्रकार

विद्वानों ने वाणी के चार रूप बताये हैं। ऋग्वेद के-

चत्वारि वाक्परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणः।
गुहा त्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति।। (ऋ.१.१६४.४५)

के भाष्य में **महर्षि दयानन्द** ने चार प्रकार की वाणी वैयाकरणों की दृष्टि से नाम, आख्यात, उपसर्ग एवं निपात के रूप में वर्गीकृत की है। आचार्य सायण ने इसके भाष्य में वाणी का वर्गीकरण वैयाकरणों की दृष्टि के अतिरिक्त नैरुक्तों आदि की दृष्टि को लेकर भी किया है। इसमें एक वर्गीकरण है- **परा,**

"our universe entirely made up of the small excess of matter the remained after annihilation." (Physics– vol.II P. 1189– Robert Resnik and Prof. David Halliday)

इससे यह स्पष्ट होता है कि ब्रह्माण्ड का द्रव्यमान पहिले अधिक था, जो बहुत कुछ ऊर्जा में परिवर्तित हो गया। शेष बचे भाग से ही ब्रह्माण्ड की रचना हुई है। इससे तो ब्रह्माण्ड का द्रव्यमान पूर्वापेक्षा कम होना चाहिए था परन्तु यहाँ बढ़ा ही है, वह भी अत्यधिक। **द्रव्यमान व ऊर्जा का संरक्षण सिद्धान्त ऐसी दुर्गति को प्राप्त कैसे करता है? इसका उत्तर बिग बैंग सिद्धान्त के पास नहीं है।**

इस प्रकार बिग बैंग सिद्धान्त, जिसमें कि शून्य आयतन से सृष्टि का प्रारम्भ माना जाता है, में 10^{-43} sec. पश्चात् से अब वर्तमान समय के बीच पदार्थ का संरक्षण किसी भी प्रकार से सिद्ध नहीं हो सकता, भले ही विस्फोट में पदार्थ प्रकाश वेग से फैले, अथवा space स्वयं 10^{28} m/sec की गति से फैले।

आएं, अब शून्य समय से 10^{-43} sec. के मध्य ऊर्जा व द्रव्य के संरक्षण पर भी कुछ दृष्टि डालें-

बिग बैंग के समय

आयतन $= 0$, द्रव्यमान $= \infty$, ताप व ऊर्जा $= \infty$

फोटोन्स $= \infty$, घनत्व $= \infty$

विस्फोट के 10^{-43} sec. पश्चात्

आयतन $= 10^{-105}$ m³ अथवा 10^{-45} m³ (पूर्वोक्त दोनों पक्षों में)

पूर्वोक्त दोनों पक्षों में द्रव्यमान $= 10^{-8}$ kg अथवा 10^{52} kg

घनत्व $= 10^{97}$ kg/m^3

ताप $= 10^{32}$ ºK

अब पाठक विचारें कि इस 10^{-43} sec. समयान्तराल में आयतन में वृद्धि के साथ-२ ऊर्जा, घनत्व, द्रव्यमान, ताप सबमें न्यूनता ही आयी है, तब ऊर्जा व द्रव्यमान का संरक्षण यहाँ भी भंग हो रहा है। तब, ऐसी स्थिति में यदि आधुनिक विज्ञान द्रव्यमान व ऊर्जा के संरक्षण के सिद्धान्त को सत्य मानता है, तब शून्य आयतन, अनन्त द्रव्यमान, ताप, ऊर्जा व घनत्व के कल्पित बिन्दु में महाविस्फोट का सिद्धान्त उपर्युक्त दोनों ही परिस्थितियों में मिथ्या सिद्ध हो जाता है। हाँ, यदि विज्ञान ऊर्जा व द्रव्य दोनों के कोई अन्य कारणभूत सूक्ष्म पदार्थ की सत्ता मानता है, तब वह विचारणीय अवश्य है, परन्तु विज्ञान ऐसा कुछ मानता नहीं है, ऐसी हमारी जानकारी है। बिग बैंग सिद्धान्त में ऊर्जा व द्रव्य के संरक्षण-भंग के अतिरिक्त हम अन्य ढंग से इस पर विचार करते हैं।

विस्फोट का कारण

जब सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड शून्य आयतन में समाया था और अनन्त ताप, ऊर्जा, द्रव्यमान व घनत्व को अपने अन्दर समेटे था। तब प्रश्न यह उठता है कि उस ऐसे अनिर्वचनीय पदार्थ में विस्फोट कैसे, किसने व क्यों किया? **आधुनिक विज्ञान क्यों, किसने एवं किसके लिए इन तीन प्रश्नों का उत्तर नहीं देता।** इस बात पर हम विचार ईश्वर तत्व के अस्तित्व की वैज्ञानिकता के प्रसंग में करेंगे। यहाँ इन प्रश्नों को उपेक्षित करते हुये भी यह तो विचार करेंगे ही कि बिग बैंग के ठीक पूर्व पदार्थ इतना सघन व गर्म कैसे होता है? इसके उत्तर में वैज्ञानिकों का कथन है कि उस समय grand unified force की ऐसी प्रबलता होती है कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को संकुचित वा सघन करते हुए शून्य आयतन में बांधे

आकाश तत्व को distort वा curve करने में समर्थ होती हैं। **उपरिनिर्दिष्ट** आर्षी भुरिगुष्णिक् अथवा २४ स्तोम रश्मियों के उत्पन्न होने पर आकाश का निर्माण तेजी से होता है।

कुछ तत्ववेत्ता ऋषियों ने एक अति महत्वपूर्ण बात कही-

"अन्तरिक्षं वा अन्तर्यामः (ग्रहः)" (मै.४.५.६; ४.७.१; काठ.२७.२; क.४२.२)

यहाँ अन्तरिक्ष अर्थात् आकाश तत्व को अन्तर्याम नामक बल कहा गया है। इस बल के विषय में जानने हेतु इस ग्रन्थ का खण्ड **३.१** पठनीय है। वहाँ अन्तर्याम बल को इस प्रकार व्याख्यात किया गया है-

"उदान वा अपान का संयुक्त बल अन्तर्याम कहलाता है। इनमें से उदान प्राण ऊपर और अपान प्राण नीचे संयुक्त होकर किसी पदार्थ के मध्य में संचरित होते रहते हैं। विभिन्न सूक्ष्म मरुद् रश्मियां भी इसी क्षेत्र में संचरित होती हैं। इन सबका संयुक्त बल अन्तर्याम कहलाता है।"

इससे स्पष्ट है कि किसी भी कण वा क्वाण्टाज़् के भीतर भी space का अंश विद्यमान रहकर उन्हें धारण किये रहता है। **आचार्य सुश्रुत** ने आकाश को सतोगुण प्रधान बताते हुए कहा है कि **"सत्त्वबहुलमाकाशम्" (सु. सं.- शारीरस्थानम्- १.२७)**। इस कारण यह तत्व सूक्ष्म व अव्यक्त प्रकाशयुक्त, सबसे हल्का अर्थात् नगण्य द्रव्यमान वाला होता है। ध्यातव्य है कि इस तत्व की उत्पत्ति के साथ प्राणियों में विद्यमान श्रोत्र इन्द्रिय की भी सूक्ष्म रश्मि रूप में उत्पत्ति होती है।

प्रश्न- महर्षि कणाद ने अपने **वैशेषिक दर्शन २.१.२७** में शब्द को आकाश का गुण बतलाते हुए कहा है-

"परिशेषाल्लिङ्गमाकाशस्य"

उधर व्याकरण महाभाष्यकार **महर्षि पतंजलि** ने **"आकाशदेशः शब्दः" (महा.अ.१/पा.१/सू. अइउण्/आ.२)** कहकर शब्द को आकाश में रहने वाला बताया है।

इस ऐसे आकाश का आपके द्वारा दर्शाये उपर्युक्त आकाश तत्व का क्या सम्बन्ध है?

उत्तर- ऋषियों के उपर्युक्त दोनों विचार हमारे द्वारा वर्णित उपर्युक्त आकाश तत्व का ही संकेत करते हैं। वस्तुतः हमारा अपना कोई विज्ञान नहीं है, बल्कि ऋषियों के ग्रन्थों का जो भाव हमने ग्रहण किया है, वही हमने दर्शाया है। हमारा वैदिक विज्ञान इस बात को दर्शाता है कि **इस सृष्टि की उत्पत्ति विभिन्न प्राण व छन्द रश्मियों के नाना प्रकार के मेल से ही हुई है। सभी पंच महाभूत पृथिवी, जल, अग्नि, वायु एवं आकाश सभी इन्हीं से बने हैं तथा प्राण व छन्द दोनों ही प्रकार की रश्मियां वस्तुतः एक ही हैं।** ये सभी मूलतः छन्द रश्मियों का ही रूप हैं। उधर सभी छन्द रश्मियां एक प्रकार की शब्द रश्मियां ही हैं। शब्द (वाणी) के चार भेद हम पूर्व में बतला चुके हैं। पृथिवी, जल, अग्नि एवं वायु इन चार महाभूतों के तो गन्ध, रस आदि गुण हैं परन्तु आकाश का इनमें से कोई गुण न होने से मात्र शब्द को आकाश का गुण माना गया है और इसे आकाश में रहने वाला माना गया है। यद्यपि शब्द अन्य महाभूतों का भी गुण होता है तथा यह उन महाभूतों में भी विद्यमान होता है परन्तु वहाँ इसकी विद्यमानता आकाश तत्व की विद्यमानता के कारण ही होती है, आकाश के अभाव में नहीं। इस कारण सभी महर्षि भगवन्तों का मत परस्पर समन्वित एवं एक-दूसरे का पूरक एवं प्रतिपादक ही जानना चाहिए। कहीं विरोध का कोई स्थान नहीं है।

प्रश्न- महर्षि कणाद एवं **महर्षि कपिल** ने आकाश के साथ-२ दिक् एवं काल का भी ग्रहण द्रव्यों में किया है। आपने काल के विषय में तो लिखा परन्तु काल का आकाश के साथ कोई सम्बन्ध नहीं दर्शाया। **आधुनिक भौतिक शास्त्री काल को आकाश के साथ अति निकटता से जोड़ते हैं।** इस विषय में आपका क्या मत है? इसके साथ ही दिशा किसे कहते हैं? क्या यह भी कोई पदार्थ है अथवा केवल व्यावहारार्थ ही इसका उपयोग है?

का दृढ़ता से यथायोग्य वितरण करता हुआ अपने पालन कर्म से सभी प्रजाजनों के हृदय में बस जाता है। (विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः) ऐसा ऐश्वर्यवान् राजा अपने प्रजाजनों को अपने अन्नादि पदार्थों के द्वारा सर्व दुःखों से तारने वाला होता है। **(ऋग्वेद १०.८६.१७)**

भावार्थ- ऐश्वर्य के इच्छुक राजा को चाहिए कि वह अपने राष्ट्र को बाहरी आक्रमणादि कष्टों से सुरक्षित रखते हुए पूर्ण पुरुषार्थ के साथ अपने अन्न-धन आदि पालन सामग्री का अपव्यय वा अव्यवस्थित वितरण कदापि न होने दे, बल्कि अपने प्रजाजनों के अन्दर पनप रहे रागद्वेषजन्य असन्तोष एवं संघर्ष को उचित पालनादि क्रियाओं व आवश्यक होने पर उचित दण्ड का आश्रय लेकर दूर करके सबका हित करने की सदैव चेष्टा करता रहे, जिससे वह सबका पितृवत् प्रिय बना रहे।

मेरा आध्यात्मिक भाष्य

१. (यस्य) जिस विद्वान् पुरुष का (कपृत्) मन एवं सुखकारी प्राणों का समूह (सक्थ्या अन्तरा) रागद्वेषादि द्वन्द्वों में आसक्ति एवं कोलाहल के मध्य (रम्बते) चिपकाया रहता है अर्थात् उन्हीं में रत रहता है, (न स ईशे) वह अपनी इन्द्रियों पर शासन नहीं कर सकता, बल्कि (यस्य निषेदुषः रोमशम्) दृढ़ व ब्रह्मवर्चस् से तेजस्वी होकर अपने अन्तः करण को प्रणव तथा गायत्र्यादि छन्दरूप वेद की पवित्र ऋचाओं में प्रशस्त रूप से रमण करते हुए (विजृम्भते) स्वयं को परमपिता सुखस्वरूप परमेश्वर के आनन्द में विस्तृत कर देता है (स इत् ईशे) वही योगी पुरुष अपनी इन्द्रियों पर शासन कर पाता है। (विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः) ऐसा जितेन्द्रिय विद्वान् अन्य प्राणियों में सबसे श्रेष्ठ होता है। **(ऋग्वेद १०.८६.१६)**

भावार्थ- विद्वान् पुरुष को चाहिए कि अपने को योगयुक्त करके परमपिता परमात्मा में रमण करने के लिए अपने अन्तःकरण को रागद्वेषादि द्वन्द्वों से दूर हटाकर प्रणव तथा गायत्र्यादि ऋचाओं के विधिपूर्वक जप द्वारा परमेश्वर की उपासना करने हेतु अपनी इन्द्रियों पर जय प्राप्त करे।

२.(यस्य निषेदुषः रोमशम्) जिस निरन्तर विश्रान्त व खिन्न रहते हुए विद्वान् पुरुष का अन्तःकरण विभिन्न गायत्र्यादि ऋचाओं का जप करते समय अर्थात् उपासना का अभ्यास करते समय (विजृम्भते) इधर उधर फैलने लगता है अर्थात् अस्थिर होकर इधर उधर भागता है, (न स ईशे) वह विद्वान् अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने में समर्थ नहीं होता है, बल्कि (यस्य कपृत्) जिसका मन तथा सुखकारी प्राण समूह (सक्थ्या अन्तरा) विभिन्न द्वन्द्वों तथा सांसारिक व्यवहार के बीच (रम्बते) स्थिर होकर तपता हुआ एक स्थान पर दृढ़ रहता हुआ निरन्तर परमेश्वर के जप में संलग्न रहता है, (स इत् ईशे) वही विद्वान् योगी बनकर अपनी इन्द्रियों पर शासन करके समग्र ऐश्वर्य को प्राप्त करता है। (विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः) ऐसा योगी स्वयं को सब दुःखों से तारकर अन्य प्राणियों को भी दुःखों से तारने वाला होता है। **(ऋग्वेद १०.८६.१७)**

भावार्थ- मुमुक्षु विद्वान् पुरुष को चाहिए कि ईश्वरोपासना वा जप करते समय मन को एकाग्र करके निरन्तर परमेश्वर में मग्न रहे तथा ऐसा करते हुए अपने सम्पूर्ण द्वन्द्वों को जीतकर स्वयं मोक्ष को प्राप्त करके दूसरे प्राणियों को भी दुःखों से दूर रहने का प्रयत्न करता रहे।

अब हम सुधी विचारकों की सेवा में अथर्ववेद के एक अत्यन्त जटिल माने जाने वाले कुन्ताप सूक्त के चार मंत्रों को उद्धृत करते हैं-

(६-९) त्रीण्युष्ट्रस्य नामानि।।१३।।
हिरण्य इत्येके अब्रवीत्।।१४।।
द्वौ वा ये शिशवः।।१५।।
नीलशिखण्डवाहनः।।१६।। (अथर्व.२०.१३२)

ध्यातव्य है कि आचार्य सायण ने इन मंत्रों का भाष्य नहीं किया है। हमें प्रतीत होता है कि उन्हें इनका कुछ भी भाव समझ में नहीं आया। पं. सातवलेकर ने भी इसी काण्ड के सूक्त १३५ व १३६ वें सूक्तों को अत्यन्त संदिग्ध व क्लिष्ट समझ कर छोड़ दिया है। हम उपर्युद्धृत चार मंत्रों का विभिन्न विद्वानों का भाष्य दर्शाते हैं-

पं. दामोदर सातवलेकर भाष्य

पदार्थ- त्रीणि उष्ट्रस्य नामानि = ऊँट के तीन नाम हैं, **हिरण्यं इति एकं अब्रवीत् =** सोना एक है ऐसा उसने कहा।।१३-१४।।

पदार्थ- द्वे वा यशः शवः = दो यश और बल ये हैं, **नीलशिखण्डः वा हनत्=** नीले चूड़ोंवाला बजायेगा।।१५-१६।।

आर्य विद्वान् पं. क्षेमकरणदास त्रिवेदी भाष्य

- (उष्ट्रस्य) प्रतापी (परमात्मा) के (त्रीणि) तीन (नामानि) नाम हैं।।१३।।
- (एकम्) एक (हिरण्यम्) हिरण्य (तेजोमय) (वा) और (द्वे) दो (यशः) यश (कीर्ति) तथा (शवः) बल हैं, (इति) ऐसा (अब्रवीत्) (वह; मनुष्य) कहता है।।१४-१५।।
- (नीलशिखण्डः) नील शिखण्ड (नीली निधियों वा निवास स्थानों का पहुंचाने वाला परमेश्वर) (वा) निश्चय करके (हनत्) व्यापक है (हन् गतौ गच्छति व्याप्नोति)।।१६।।

आर्य विद्वान् प्रो. विश्वनाथ विद्यालंकार भाष्य

- (उष्ट्रस्य) सांसारिक दाहों अर्थात् ताप सन्तापों से त्राण करने वाले, बचाने वाले परमेश्वर के (त्रीणि) तीन (नामानि) नाम हैं। {उष्ट्र= उष् (दाहे) + त्र (त्राणकर्त्ता)}।।१३।।
- (एके) कई एक अर्थात् सात्विक-प्रकृति के उपासक कहते हैं कि वह (हिरण्यम्) ''हिरण्य'' नाम वाला है, (अब्रवीत्) ऐसा ही वेद ने भी कहा है। **{हिरण्यम्= हितं च रमणीयं च, हृदयरमणं भवति (नि.२.३.१०)}** अर्थात् परमेश्वर सबका ''हित'' करता है, ''रमणीय'' है, और ''हृदयों में रमता है''। वेद में भी कहा है कि **''हिरण्यरूपः स हिरण्यसंदृक्'' (ऋ.२.३५.१०)** अर्थात् वह परमेश्वर हिरण्य के रूप वाला है, और हिरण्य के सदृश है।}।।१४।।
- (वा) तथा (ये) जो (शिशवः) शिशु बुद्धि के लोग हैं, वे कहते हैं कि (द्वौ) उसके दो नाम हैं। {शिशवः = तामसिक और राजसिक लोग}।।१५।।
- (नीलशिखण्डवाहनः) दो नाम हैं- नीलवाहन और शिखण्डवाहन। {''नील'' पद तमोगुण का द्योतक है, और ''शिखण्ड'' पद रजोगुण का। **''अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णाम्'' (श्वेता.उ.४.५)** में ''अजा'' का अर्थ है- न उत्पन्न होने वाली प्रकृति। ''लोहित''=रजोगुण। शुक्ल= सत्वगुण। कृष्ण= तमोगुण।} तमोगुण को मंत्र में ''नील'' कहा है, और रजोगुण का निर्देश ''शिखण्ड'' पद द्वारा किया गया है। शिखण्ड का अर्थ है- मोर की पूंछ, जो रंग बिरंगी होती है। रजोगुणी व्यक्ति संसार के नानाविध रंग-बिरंगों को चाहता है। शिशु बुद्धि वाले लोग कहते हैं कि परमेश्वर ''नीलवाहन'' है, तमोगुण वाले जगत् का वहन करता है; और वह ''शिखण्डवाहन'' है, रजोगुणी जगत् का वहन करता है। तमोगुणी व्यक्ति को जगत् तमोमय दीखता है, रजोगुणी को रजोमय तथा सत्वगुणी को जगत् में सत्वगुण दीखता है।।१६।।

इन मंत्रों पर मेरा भाष्य

अब हम इन उपर्युद्धृत चार मंत्रों पर अपने विचार एवं भाष्य को प्रस्तुत करते हैं-

(१.) त्रीण्युष्ट्रस्य नामानि।।१३।।

इस ऋचा का सृष्टि प्रक्रिया पर प्रभाव

आर्ष व दैवत प्रभाव-

इन मंत्रों के देवता व छन्द के विषय में केवल पं. क्षेमकरणदास त्रिवेदी ने ही लिखा है, अन्य भाष्यकार इस विषय में मौन हैं। हमारे मत में इन सभी मंत्रों का ही नहीं, अपितु **अथर्ववेद २०.१२७-१३६** तक कुल दस सूक्तों का ऋषि कुन्ताप है, इसी कारण इन दसों सूक्तों को कुन्ताप कहा जाता है। यह एक ऐसा सूक्ष्म प्राण है, जो वज्ररूप वा वज्रयुक्त विकिरणों को और अधिक तपाता है अर्थात् उन्हें अधिक बलशाली एवं उष्ण बनाता है। इस विषय में पाठक इस ग्रन्थ के खण्ड **६.३२** का गम्भीरता से अवलोकन करें। तारों के अन्दर होने वाली विभिन्न ऐन्द्री क्रियाएं अर्थात् विद्युत् बलों की क्रियाएं इसके आर्ष प्रभाव से तीक्ष्ण होती हैं। इसका देवता प्रजापति है। इस कारण **{प्रजापतिः = स एष संवत्सरः प्रजापतिः (श.१४.४.३.२२), सर्वाणि छन्दांसि प्रजापतिः (श.६.२.१.३०), प्राणो हि प्रजापतिः (श.४.५.५.१३)}** इसके दैवत प्रभाव से तारों के अन्दर विभिन्न प्राण व छन्द रश्मियां तपने व देदीप्यमान होने लगती हैं, जिससे तारों के अन्दर उनके बलों में वृद्धि होने लगती है।

छान्दस प्रभाव- इसका छन्द दैवी जगती है। इसके प्रभाव से विभिन्न देवों अर्थात् प्राण व छन्द रश्मियों के पारस्परिक संयोजन व वियोजन की प्रक्रियाएं समृद्ध होती हैं। ये रश्मियां तारों के अन्दर दूर-२ तक व्याप्त होकर अपना प्रभाव दर्शाती हैं।

ऋचा का प्रभाव- तारों के अन्दर तीन प्रकार की छन्द रश्मियां ऊष्मा को समृद्ध करते हुए विभिन्न परमाणुओं को नाना क्रियाओं में तारने में समर्थ होती हैं। यहाँ तारने का आशय है कि असुरादि बाधक रश्मियों के प्रहार से उन परमाणुओं की रक्षा करती हैं। वे तीन छन्द रश्मियां कौन सी हैं, यह आगामी ऋचाओं के भाष्य में द्रष्टव्य है। यह ऋचा उन तीन ऋचाओं को प्रेरित करती है। हमारे विचार से यह छन्द रश्मि न केवल आगामी तीन छन्द रश्मियों को प्रेरित करती है, अपितु अन्य तीन प्रकार की छन्द रश्मियों को भी प्रेरित करती है।

मेरा आधिदैविक भाष्य

(उष्ट्रस्य) **{उष्ट्रः = ओजति दहतीति (उ.को.४.१६३), (उष दाहे= जलाना, उपभोग करना, खपाना, पीटना, मार डालना -आप्टे संस्कृत-हिंदी कोष)}** तारों के अन्दर विभिन्न प्राण व छन्दादि रश्मियां नाना प्रकार की विद्युत् चुम्बकीय आदि तरंगों एवं कणों को उत्तेजित व प्रेरित करते हुए ताड़ती हैं। इससे उनकी ऊर्जा में वृद्धि होती है। दूसरी ओर उस समय विभिन्न कणों के मध्य संयोजनादि (संलयनादि) क्रियाओं में बाधक बनी असुर रश्मियों किंवा डार्क एनर्जी को ताड़ती एवं नष्ट वा नियन्त्रित करती हैं। उन ऐसी प्रक्रियाओं तथा उन्हें संचालित वा प्रेरित करने वाली रश्मियों को उष्ट्र कहा जाता है। ऐसी उष्ट्र संज्ञक रश्मियां (त्रीणि, नामानि) तीन प्रकार की छन्द रश्मियों के रूप में होती हैं, **{नाम= वाङ्नाम (निघं.१.११)}** ये तीनों प्रकार की छन्द रश्मियां अन्य छन्द रश्मियों को नाना बाधाओं से पार लगाने में समर्थ होती हैं।

भावार्थ- तारों के अन्दर तीन प्रकार की छन्द रश्मियां अन्य छन्द रश्मियों को प्रेरित करके ऊष्मा में वृद्धि करने के साथ डार्क एनर्जी आदि के दुष्प्रभावों को नष्ट करती हैं।

मेरा आधिभौतिक भाष्य

(उष्ट्रस्य) राष्ट्र के शत्रुओं वा प्रजा के अन्दर ही विद्यमान राष्ट्रद्रोही तत्वों को दग्ध करने वाले राजा के (त्रीणि, नामानि) तीन व्यवहार प्रसिद्ध हैं, **{नाम= प्रसिद्धम् व्यवहारम् (म.द.ऋ.भा.६.६६.५)}** राजा के ये व्यवहार राजा को ख्याति प्रदान करने तथा राष्ट्र व प्रजा को शत्रुओं के सन्ताप से तारने वाले होते हैं।

इन प्रमाणों से संयोगादि प्रक्रिया में दक्षिणी ध्रुव की भूमिका प्रतिपादित होती है। इस प्रकार संयोग वियोग इन दोनों ही दिशाओं से सम्पन्न हो सकता है।।

वैज्ञानिक भाष्यसार- किसी इलेक्ट्रॉन से संयुक्त वा वियुक्त होते समय उपर्युक्त तीनों छन्द रश्मियाँ अपनी भूमिका निभाती हैं। जब कोई फोटोन इलेक्ट्रॉन पर गिरता है, तो वह इलेक्ट्रॉन के उत्तरी वा दक्षिणी भाग से ही प्रविष्ट होता है और जब वह वापिस इलेक्ट्रॉन से उत्सर्जित होता है, तो वह उसी दिशा से उत्सर्जित होता है। दिशा का यह नियम उपर्युक्त प्रथम छन्द रश्मि के कारण होता है। शेष दोनों रश्मियां फोटोन को इलेक्ट्रॉन के द्वारा पूर्ण रूप से अवशोषित करने में काम आती हैं, जिससे फोटोन की ऊर्जा इलेक्ट्रॉन, जो स्वयं सूक्ष्म कणों का समूह होता है, में व्याप्त हो जाती है और जब इलेक्ट्रॉन से वह फोटोन वापिस उत्सर्जित होता है, तो इन्हीं दो छन्द रश्मियों के प्रभाव से वह ऊर्जा एकत्र होकर प्रथम रश्मि के सहयोग से इलेक्ट्रॉन की उसी दिशा से घनीभूत रूप में बाहर उत्सर्जित हो जाती है।।
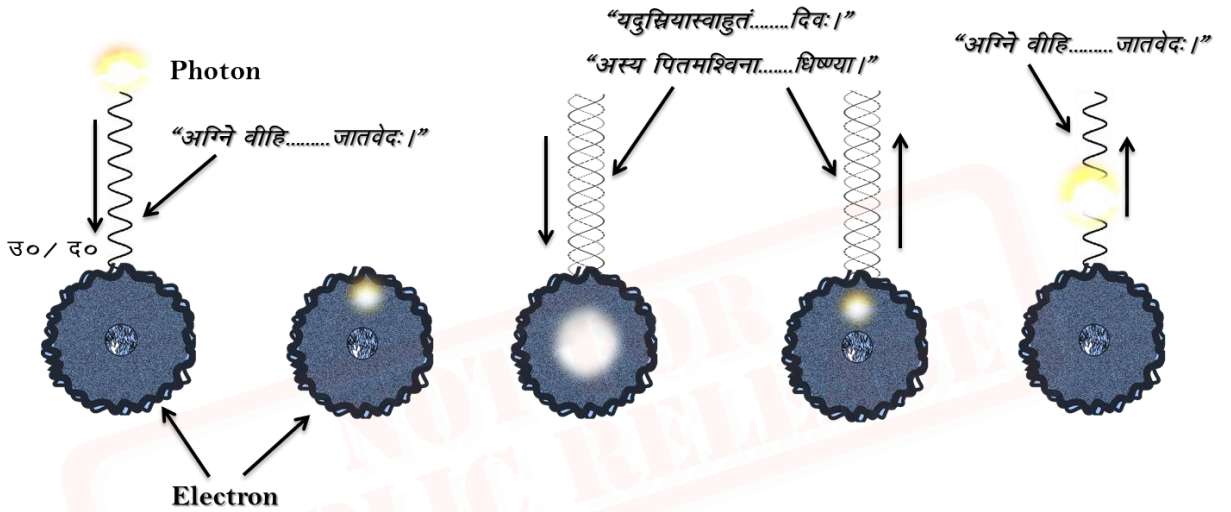
चित्र ४.४ किसी फोटोन के इलेक्ट्रॉन से संयुक्त वा वियुक्त होने की प्रक्रिया

४. त्रयाणां ह वै हविषां स्विष्टकृतेन समवद्यन्ति सोमस्य घर्मस्य वाजिनस्येति स यदनुवषट्करोत्यग्नेरेव स्विष्टकृतोऽनन्तरित्यै।। ‘विश्वा आशा दक्षिणासादिति’ ब्रह्मा जपति।।

{वाजी = छन्दांसि वै वाजिनः (गो.उ.१.२०), पशवो वै वाजिनः (तै.ब्रा.१.६.३.१०), वाजिनम् अन्नवन्तम् (नि.१०.२८)। अन्तरिति = अन्तः+इ+क्तिन्। सोमः = अन्नम् (कौ.ब्रा.६.६)}

व्याख्यानम्- उपर्युक्त स्विष्टकृत् अर्थात् उत्तर वा दक्षिण दिशा से तीन प्रकार के पदार्थों का संयोग वा वियोग होता है- (१) सोम अर्थात् सोम वायु वा अन्न संज्ञक संयोज्य कण (२) घर्म अर्थात ताप वा प्रकाश के कण (३) वाजी अर्थात् छन्द वा मरुद् रश्मियाँ।

पूर्व कण्डिका में जिस वषट्कार का वर्णन है, वह पदार्थों के संयुक्त वा वियुक्त होने को ही दर्शाता है। हमने भी वहाँ इसी प्रकार का व्याख्यान किया है। इस प्रकार पूर्व कण्डिका की इस कण्डिका से संगति समझनी चाहिए।।

चित्र १८.५ प्रथम स्थिति

इसमें कुल १२ स्वर्गलोक हैं, जिनमें ६ भूलोक, ६ आदित्यलोक तथा ६ लोक अन्तरिक्ष हैं। अब अग्रिम स्थिति नीचे दिए गए चित्र में समझें।
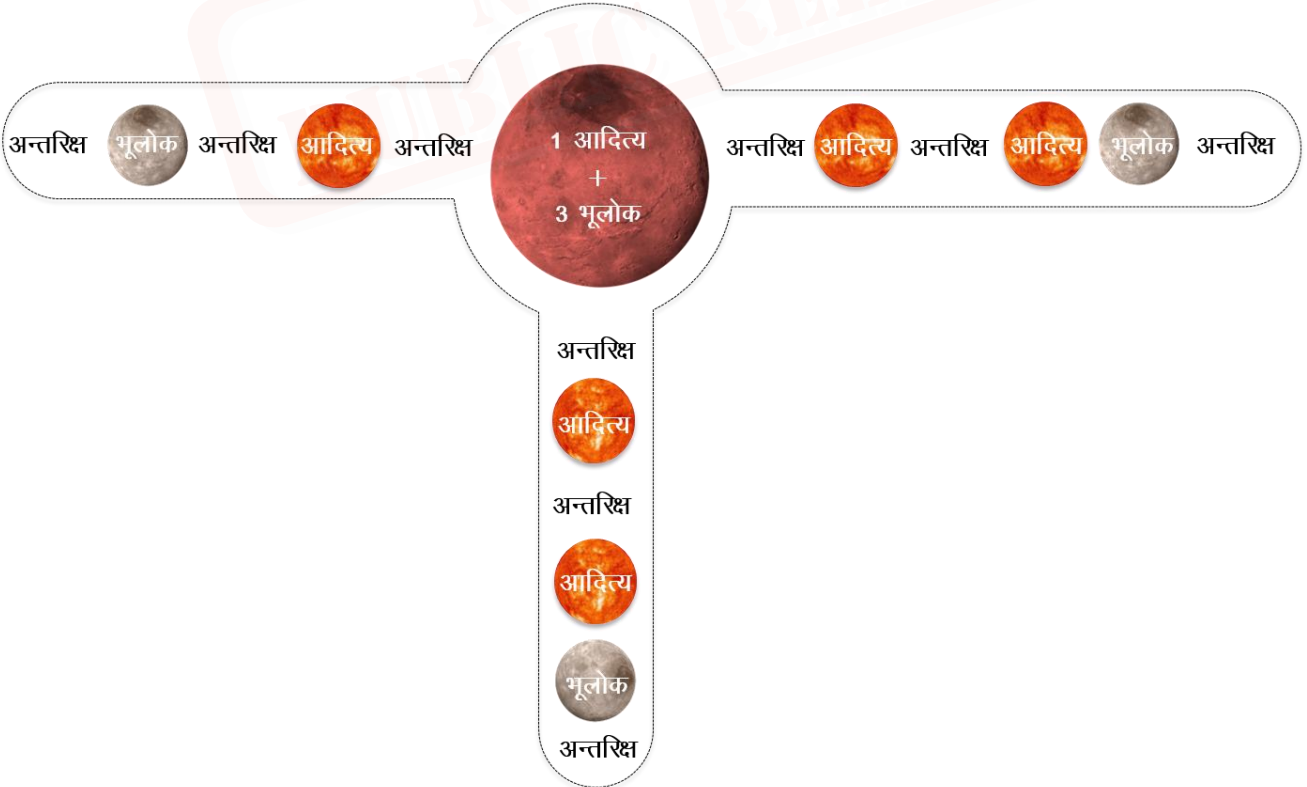
चित्र १८.६ द्वितीय स्थिति

Customer reviews on Amazon.in till now

Review this product

Share your thoughts with other customers

Write a product review
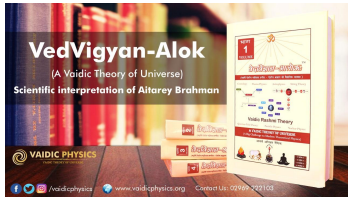
Naagendra Singh

Must have book for seekers

18 October 2018

This is a boon for sceince students as well as Ved lovers.

3 people found this helpful

Helpful | Comment | Report abuse

Vineet P.

It's a boon to modern science and education

29 October 2018

This book is a complete package for engineers, scientists and researchers as well as for students of 12th or above with science background. So many theories are clearly and we'll mentioned in this book about which modern science knows nothing.

Hoping for English translation of this book very soon

One person found this helpful

Helpful | Comment | Report abuse

Amazon Customer

Awesome book ever I read

22 October 2018

This is book is very good and simple to read for any background, very interesting explanation of various vaidic and modern science theories. I am enjoying by reading this book. I am highly recommending this book.

4 people found this helpful

इस ग्रन्थ को क्यों पढ़ें?

✓ वेदादि शास्त्रों के हजारों वर्षों से लुप्त विज्ञान को गंभीरता से समझने,

✓ वर्तमान सैद्धांतिक भौतिकी की अनेकों अनसुलझी गंभीर समस्याओं के समाधान,

✓ प्रकृति से मूलकण व फोटोन से लेकर गैलेक्सी निर्माण तक की वैज्ञानिक प्रक्रिया को जानने,

✓ ईश्वर के वैज्ञानिक स्वरूप व उसके क्रिया विज्ञान को समझने,

✓ विश्व व देश की अनेक सामाजिक समस्याओं के दूरगामी समाधान

हेतु इस ग्रन्थ को अवश्य पढ़ें।

विशाल आर्य (सम्पादक)

Important Features of VedVigyan-Alok

- ✓ Four volumes
- ✓ 2800 Pages
- ✓ Art paper
- ✓ Hard cover binding
- ✓ Multi color printing
- ✓ Hundreds important diagrams
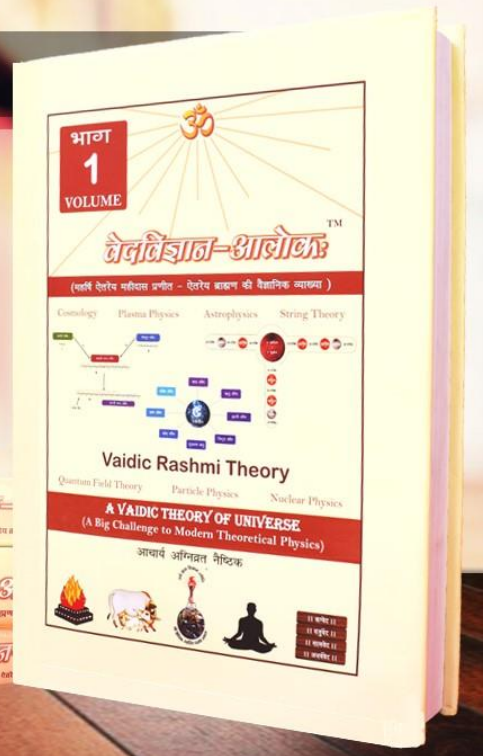
Shree Vaidic Swasti Pantha Nyas

Ved Vigyan Mandir, Vill. Bhagal Bhim
Teh. – Bhinmal, Dist. - Jalore (Raj.) – 343029
Phone – 02969 222103, Mobile – 9414182173
Email: swamiagnivrat@gmail.com
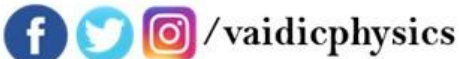
परिशिष्ट २

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

क्र.सं.	ग्रन्थ नाम	लेखक/भाष्यकार/ संपादक	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष/संस्करण
1.	अथर्ववेद संहिता	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, नई दिल्ली	2012
2.	अथर्ववेद भाष्य	प्रो. विश्वनाथ विद्यालंकार	रामलाल कपूर ट्रस्ट, सोनीपत, हरियाणा	2004
3.	अथर्ववेद भाष्य	पं. क्षेमकरणदास त्रिवेदी	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली	वि.सं.2045
4.	अथर्ववेद भाष्य	डॉ. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर	विश्व मानव उत्थान परिषद् (पंजी.), नई दिल्ली	2005
5.	अनुभ्रमोच्छेदन	भीमसेन शर्मा	वैदिक पुस्तकालय, अजमेर	1995
6.	अमरकोष	स्व. श्री रामतेज पाण्डेय	चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी	1990
7.	अष्टाध्यायी भाष्य	डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य	स्वामी विरजानन्द आर्ष धर्मार्थ न्यास, गुरुकुल झज्जर, हरियाणा	1997
8.	आपस्तम्ब श्रौतसूत्र	-	-	-
9.	आप्टेकोश	वामन शिवराम आप्टे	नाग प्रकाशक, दिल्ली	1988
10.	आर्याभिविनय	महर्षि दयानन्द सरस्वती	आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, नई दिल्ली	1986
11.	आर्योद्देश्यरत्नमाला	महर्षि दयानन्द सरस्वती	आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, नई दिल्ली	1994

12.	आश्वलायन गृहसूत्र	डॉ. नरेन्द्रनाथ शर्मा	ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली	1976
13.	आश्वलायन श्रौतसूत्र	डॉ. मण्डनमिश्र	श्री लालबहादुर शास्त्री, केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली	1984-85
14.	उणादि कोश	महर्षि दयानन्द सरस्वती	श्रीमती सावित्रीदेवी बागड़िया धर्मार्थ ट्रस्ट, कलकत्ता	2010
15.	ऋग्वेद भाष्य	महर्षि दयानन्द सरस्वती	वैदिक पुस्तकालय, अजमेर	1985
16.	ऋग्वेद भाष्य	स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक	वैदिक पुस्तकालय, अजमेर	-
17.	ऋग्वेद भाष्य	आचार्य बैद्यनाथ शास्त्री	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली	वि.सं.2040
18.	ऋग्वेद भाष्य	महर्षि दयानन्द सरस्वती	चौधरी प्रतापसिंह, मॉडल टाऊन, हरियाणा	1973
19.	ऋग्वेद भाष्य	पं. जयदेव शर्मा	आर्य साहित्य मण्डल लिमिटेड, अजमेर	वि.सं.2032
20.	ऋग्वेद भाष्य	सायणाचार्य	कृष्णदास अकादमी, वाराणसी	1983
21.	ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका	पं. युधिष्ठिर मीमांसक	चौधरी प्रतापसिंह, मॉडल टाऊन, करनाल, हरियाणा	1973
22.	ऋग्वेद महाभाष्य	आचार्य विश्वश्रवा व्यास	वैदिक पुस्तकालय, अजमेर	1977
23.	ऋग्वेद संहिता	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, नई दिल्ली	2007
24.	ऋग्वेद संहिता	-	चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली	2006
25.	ऐतरेय आरण्यक	सायणाचार्य	आनन्द आश्रम मुद्रणालय, पूना	1898

26.	ऐतरेय ब्राह्मण	सायणाचार्य	तारा प्रिंटिंग वर्क्स, वाराणसी	1986
27.	कठ संहिता	'ऐतरेय ब्राह्मण' के आचार्य सायण भाष्य से उद्धृत		
28.	कठोपनिषद् (एकादशोपनिषद)	डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार	विजयकृष्ण लखनपाल, नई दिल्ली	2000
29.	कपिष्ठल संहिता	श्री रघुवीर वीर	मेहरचन्द लक्ष्मणदास दरियागंज, दिल्ली-६	1912
30.	काठक संकलन	'ब्राह्मणोद्धार कोष' से उद्धृत		
31.	काठक संहिता	पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर	स्वाध्याय मण्डल, वलसाड़, गुजरात	1983
32.	काण्व संहिता	-	चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली	2000
33.	काण्वीय शतपथ	'ब्राह्मणोद्धार कोष' से उद्धृत		
34.	कात्यायन श्रौतसूत्र	महर्षि कात्यायन	चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली	2005
35.	कौषीतकि ब्राह्मण	डॉ. गंगासागर राय	रत्ना पब्लिकेशन्स, वाराणसी	1987
36.	गोकरुणानिधि	महर्षि दयानन्द सरस्वती	आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, नई दिल्ली	1998
37.	गोपथ ब्राह्मण	पं. क्षेमकरणदास त्रिवेदी	चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली	1999
38.	छान्दोग्योपनिषद् (एकादशोपनिषद)	डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार	विजयकृष्ण लखनपाल, नई दिल्ली	2000
39.	जैमिनीय ब्राह्मण	श्री लोकेशचन्द्र	सरस्वती विहार, नागपुर	1950

40.	जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण	पं. भगवद्दत्त रिसर्च स्कॉलर	विद्याप्रकाश प्रेस, चङ्गड़महल्ला, लाहौर	1921
41.	ताण्ड्य महाब्राह्मण	सायणाचार्य	चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली	2003
42.	तैत्तिरीय आरण्यक	सायणाचार्य	-	-
43.	तैत्तिरीय उपनिषद् (एकादशोपनिषद)	डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार	विजयकृष्ण लखनपाल, नई दिल्ली	2000
44.	तैत्तिरीय ब्राह्मण	सायणाचार्य	आनन्द आश्रम मुद्रणालय	1979
45.	तैत्तिरीय संहिता	-	चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली	2005
46.	दैवत ब्राह्मण	सायणाचार्य	मुक्त संस्कृत महाविद्यालय, कलकत्ता	1881
47.	ध्यान-योग-प्रकाश	योगिराज स्वामी लक्ष्मणानन्द	रामलाल कपूर ट्रस्ट, सोनीपत, हरियाणा	2006
48.	नारदीय शिक्षा	शिवराज आचार्य कौडिन्न्यायन	चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी	2002
49.	निघण्टु	महर्षि यास्क	मेहरचन्द लछमनदास पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली	1985
50.	निघण्टु निर्वचनम्	श्री देवराजयज्व	रामलाल कपूर ट्रस्ट, सोनीपत, हरियाणा	1998
51.	निरुक्तम्	पं. भगवद्दत्त रिसर्च स्कॉलर	रामलाल कपूर ट्रस्ट, सोनीपत, हरियाणा	2004
52.	न्याय दर्शन (वात्स्यायन भाष्यसहित)	महर्षि गोतम	चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली	1988
53.	पाणिनीय अष्टाध्यायी	महर्षि पाणिनि	अनीता आर्ष प्रकाशन, पानीपत	1990

54.	पिंगल-छन्द-शास्त्र	पिंगलाचार्य	चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी	2002
55.	ब्रह्मसूत्र (विद्योदयभाष्यम्)	आचार्य उदयवीर शास्त्री	विरजानन्द वैदिक शोध संस्थान, गाजियाबाद (उ.प्र.)	1983
56.	ब्राह्मणोद्धार कोश	विश्वबन्धु	विश्वेश्वरानन्द भारत भारती ग्रन्थमाला-३८	1966
57.	मनुस्मृति	डॉ. सुरेन्द्र कुमार	आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, नई दिल्ली	2005
58.	महाभारत	महर्षि वेदव्यास	गीताप्रेस, गोरखपुर	2001
59.	माण्डूक्य उपनिषद् (एकादशोपनिषद)	डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार	विजयकृष्ण लखनपाल, नई दिल्ली	2000
60.	मीमांसा दर्शन (शाबर-भाष्य)	महर्षि जैमिनी	युधिष्ठिर मीमांसक बहालगढ़, सोनीपत, हरियाणा	1986
61.	मुण्डकोपनिषद् (एकादशोपनिषद)	डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार	विजयकृष्ण लखनपाल, नई दिल्ली	2000
62.	मैत्रायणी संहिता	-	चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली	2005
63.	यजुर्वेद भाष्य	महर्षि दयानन्द सरस्वती	वैदिक पुस्तकालय, अजमेर	-
64.	यजुर्वेद संहिता	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, नई दिल्ली	-
65.	योगदर्शन (व्यास भाष्य सहित)	महर्षि पतंजलि	आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, आबूपर्वत, राजस्थान	2003
66.	वर्णोच्चारण शिक्षा	महर्षि दयानन्द सरस्वती	विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, नई दिल्ली	2011
67.	वाक्यपदीयम्	डॉ. शिवशंकर अवस्थी	चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी	2001

68.	वाचस्पत्यम् कोश	श्रीतारानाथतर्क वाचस्पतिभट्टाचार्य	राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली	2002
69.	वाजसनेय संहिता	'ऐतरेय ब्राह्मण' के आचार्य सायण भाष्य से उद्धृत		
70.	वैदिक इतिहासार्थ निर्णय	पं. शिवशंकर काव्यतीर्थ	सत्यार्थ प्रकाशन न्यास, कुरुक्षेत्र, हरियाणा	2009
71.	वैदिक कोश	आचार्य राजवीर शास्त्री	श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय न्यास, नई दिल्ली	2009
72.	वैदिक वाङ्मय का इतिहास	पं. भगवद्दत्त रिसर्च स्कॉलर	विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, नई दिल्ली	2008
73.	वैदिक सम्पत्ति	पं. रघुनन्दन शर्मा	श्री घूड़मल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट, हिण्डौनसिटी, राजस्थान	2003
74.	वैशेषिक दर्शन	आचार्य उदयवीर शास्त्री	विरजानन्द वैदिक शोध संस्थान, गाजियाबाद (उ.प्र.)	1984
75.	व्यवहारभानु	महर्षि दयानन्द सरस्वती	आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, नई दिल्ली	2006
76.	व्याकरण महाभाष्य	महर्षि पतंजलि	चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली	2004
77.	शतपथ ब्राह्मण	सायणाचार्य	राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली	2002
78.	श्रीमद् भगवद्गीता	महर्षि वेदव्यास	गीताप्रेस, गोरखपुर	1987
79.	श्रौत-यज्ञ-मीमांसा	पं. युधिष्ठिर मीमांसक	श्रीमती सावित्रीदेवी बागड़िया धर्मार्थ ट्रस्ट, कलकत्ता	2004
80.	शांखायन आरण्यक	विनायक गणेश आप्टे	आनन्दश्रम मुद्रणालय, पूना	1922
81.	शांखायन श्रौतसूत्र	'ऐतरेय ब्राह्मण' के आचार्य सायण भाष्य से उद्धृत		

82.	श्वेताश्वतर उपनिषद् (एकादशोपनिषद)	डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार	विजयकृष्ण लखनपाल, नई दिल्ली	2000
83.	सत्यार्थ प्रकाश	महर्षि दयानन्द सरस्वती	श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर, (राज.)	2015
84.	सन्मार्ग दर्शन	स्वामी सर्वदानन्द महाराज	श्री घूड़मल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट, हिण्डौनसिटी, राजस्थान	2004
85.	संस्कार विधि	महर्षि दयानन्द सरस्वती	आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, नई दिल्ली	1989
86.	संस्कृत-धातु-कोश	पं. युधिष्ठिर मीमांसक	रामलाल कपूर ट्रस्ट, सोनीपत, हरियाणा	2009
87.	सामविधान ब्राह्मण	सायणाचार्य	केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति	1980
88.	सामवेद भाष्य	स्व. श्री पं. तुलसीराम स्वामी	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली	वि.सं.2046
89.	सामवेद संहिता	स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक 'विद्यामार्तण्ड'	मानव उत्थान संकल्प संस्थान (पंजी.), नई दिल्ली	2005
90.	साम्बपञ्चाशिका	'वैदिक वाङ्मय का इतिहास' ग्रन्थ से उद्धृत		
91.	सांख्य दर्शन	महर्षि कपिल	विरजानन्द वैदिक शोध संस्थान, गाजियाबाद (उ.प्र.)	1987
92.	सुश्रुत संहिता	आचार्य सुश्रुत	चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी	2014
93.	स्वमन्तव्या-मन्तव्यप्रकाश	महर्षि दयानन्द सरस्वती	वैदिक पुस्तकालय, अजमेर	1992
94.	षड्विंश ब्राह्मण	सायणाचार्य	मुक्त संस्कृत महाविद्यालय, कलकत्ता	1881
95.	दयानन्द विचार कोश भाग-१	डॉ. रामनाथ वेदालंकार	प्रकाशन ब्यूरो, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़	1982

S.R.	Book Title	Author/ Editor	Publisher	Year/ Edition
1.	A Brief History of Time	Stephen Hawking	Bantam Books	1988
2.	A New Case for an Eternally Odd Infinite Universe	Dr. A. K. Mitra	Article	Aug, 2004
3.	Acoustics	Joseph L. Hunter	Prentice Hall, the University of Michigan	2007
4.	An Astrophysical Peek into Einstein's Static Universe: No Dark Energy	Dr. A. K. Mitra	Article	Aug, 2008
5.	Asianic Elements in Greek Civilization, Ramsay.	'वैदिक वाङ्मय का इतिहास' ग्रन्थ के प्रथम भाग से उद्धृत		
6.	Astrophysics Stars and Galaxies	K D Abhyankar	Universities Press (India) Ltd.	2001
7.	Basic Material Cause of the Creation	Acharya Agnivrat Naishthik	Shri Vaidic Swasti Pantha Nyas, Bhinmal, Rajasthan	2005
8.	Chambers Dictionary	Robert Allen	Allied Chambers (India) Ltd. New Delhi	2000
9.	Concepts of Mass in Classical and Modern Physics	Max Jammer	Dover Publications, Inc. Mineola, New York	2014
10.	Concepts of Modern Physics	Arthur Beiser	Tata McGraw- Hill Publishing Co. Ltd., New Delhi	2003
11.	Cosmology- The Science of the Universe	Edward Harrison	Cambridge University Press	2000
12.	Discovery of Cosmic Fractals	Yurij Baryshev & Pekka Teerikorpi	World Scientific, New Jersey	2002

13.	Lectures on Physics	Richard P. Feynman	Narosa Publishing House, New Delhi	1965
14.	Meeting the Standards in Primary Science	Lynn D. Newton	Routledge, Chapman&Hall	2016
15.	Oxford Advanced Learner's Dictionary	A P Cowie	Oxford University Press	1994
16.	Oxford Dictionary of Physics	Alan Issacs	Oxford University Press	2000
17.	Physics	Halliday, Reshick, Krane	John Wiley & Sons, Inc.	2002
18.	Q is for Quantum Particle Physics from A to Z	John Gribbin	Universities Press (India) Ltd.	1999
19.	Quantumchromodynamic s	Walter Greiner & Andreas Schafer	Springer	1995
20.	The Birth of Time	John Gribbin	Universities Press (India) Ltd.	2000
21.	The Briefer History of Time	Stephen Hawking & Leonard Mlodinow	Bantam Press	2008
22.	The First Three Minutes- A Modern View of the Origin of the Universe	Steven Weinberg	Flamingo	1976
23.	The Grand Design	Stephen Hawking	Bantam Press	2010
24.	The Origins of the Future- Ten Questions for the Next Ten Years	John Gribbin	Yale University Press, New Haven and London	2006
25.	The Physics of Reality	Richard L. Amoroso, Louis H. Kauffman, Peter Rowlands	World Scientific	2012
26.	The Religion of Ancient Egypt, Mercer.	'वैदिक वाङ्मय का इतिहास' ग्रन्थ के प्रथम भाग से उद्धृत		

27.	The Road to Reality	Roger Penrose	Jonathan Cape London	2004
28.	The Trouble with Physics	Lee Smolin	The Penguin Group, USA	2006
29.	The World of Physics	Jefferson Hone Weaver	Simon and Schuster, New York	1987
30.	Wikipedia			

वेदविज्ञान-आलोकः™

(महर्षि ऐतरेय महीदास प्रणीत - ऐतरेय ब्राह्मण की वैज्ञानिक व्याख्या)

इस ग्रन्थ को क्यों पढ़ें

- आधुनिक सैद्धान्तिक भौतिकी (Theoretical physics) की विभिन्न गम्भीर समस्याओं विशेषकर Cosmology, Astrophysics, Quantum field theory, Plasma physics, Particle physics एवं String theory से सम्बन्धित अनेक वास्तविक समस्याओं का आश्चर्यजनक समाधान इस ग्रन्थ के गहन अध्ययन से सम्भव है। इसके साथ ही इन क्षेत्रों में नये-२ अनुसंधान करने के लिए आगामी लगभग 100 वर्ष के लिए पर्याप्त सामग्री इस ग्रन्थ में विद्यमान है।
- इस ग्रन्थ से विकसित वैदिक सैद्धान्तिक भौतिकी (Vaidic theoretical physics) भविष्य में आश्चर्यजनक एवं निरापद टैक्नोलॉजी के अनुसंधान को जन्म दे सकेगी तथा विज्ञान की अन्य शाखाओं में भी कुछ विशेष परिवर्तन भविष्य में हो सकते हैं।
- विश्वभर के धर्माचार्यों व अध्यात्मवादियों को ईश्वर के अस्तित्व व स्वरूप की वैज्ञानिकता के विस्तृत ज्ञान तथा इसके द्वारा संसार में एक धर्म, एक भाषा, एक भावना को स्थापित करने में यह ग्रन्थ महत्वपूर्ण साधन है।
- वर्तमान भौतिक वैज्ञानिकों को यह जानने कि ईश्वर तत्व के ज्ञान के बिना भौतिक विज्ञान समस्याग्रस्त ही रहेगा तथा धर्माचार्यों को यह जानने हेतु कि ईश्वर के कार्य करने की प्रणाली (Mechanism) क्या है, यह ग्रन्थ एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक का कार्य करेगा। इसके साथ ही उन्हें इस बात का भी बोध होगा कि धर्म, ईश्वर आदि आस्था व विश्वासों का विषय नहीं है बल्कि सत्य विज्ञान पर आधारित वास्तविकता है, जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के लिए एक समान ही है।
- भारत के प्रबुद्ध वर्ग में नये राष्ट्रिय स्वाभिमान, ऐतिहासिक व सांस्कृतिक गौरव एवं बौद्धिक स्वतंत्रता का भाव भरने में यह ग्रन्थ एक क्रान्तिकारी दिशा देगा।
- यह ग्रन्थ वेदों तथा संस्कृत भाषा का ऐसा यथार्थ स्वरूप संसार के समक्ष प्रस्तुत करेगा, जिसकी कल्पना विश्व के सम्भवतः इस समय किसी भी वेदज्ञ एवं संस्कृतज्ञ को नहीं होगी।
- यह ग्रन्थ विश्वभर के मनुष्यों को अहिंसा, सत्य, ईमानदारी, प्रेम, करुणा, न्याय आदि मानवीय सद्गुणों की ओर ले जाने में समर्थ होगा तथा भय, हिंसा, आतंक, ईर्ष्या, द्वेष, वैर, मिथ्या छलकपट व बेईमानी से मुक्त करने में सहयोग करेगा।

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास
(वेद विज्ञान मन्दिर)
वैदिक एवं आधुनिक भौतिक शोध संस्थान